मक़बूल दुआएं तर्जुमे के साथ

मोमिन का हथियार

मक़बूल दुआएं मय तर्जुमा

मुन्जियात

तर्जुमा व फ़ज़ीलत के साथ

मन्ज़िल

फ़ज़ीलत के साथ

असमाए हुस्ना

तर्जुमा के साथ

मुरत्तिब : अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस इब्न हज़रत मौलाना मो० उमर साहब पालनपुरी (रहिम०)

मुतर्जिम : मुफ़्ती आदम साहब पालनपुरी

ऐ अल्लाह! इस किताब की इशाअत में जिन लोगों ने जितना भी हिस्सा लिया हो उन सब को कुबूल फरमा और उनकी जाइज़ मुरादें पूरी फरमा, आमीन!

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ
اَلْاَحْيَآءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ۔ اٰمِيْن

- हर दुआ यकीन और इस्तहज़ार के साथ पढ़ें।
- दुआओं का फायदा फराइज़ के एहतेमाम पर मौकूफ है। कोई भी नफिल अमल फराइज़ का बदल नहीं हो सकता इसलिए तमाम फराइज़ का एहतेमाम निहायत ज़रूरी है।

नोट : जो अल्लाह का बन्दा इस किताब को तबअ कराना चाहे या किसी ज़बान में इसका तर्जुमा करना चाहे तो मुरत्तिब की जानिब से बिना घटाए बढ़ाए इसको शाया करने की मुकम्मल इजाज़त है।

अर्जे मुरत्तिब

जो लोग अरबी अल्फ़ाज़ में मसनून दुआएं न पढ़ सकते हों ऐसे लोगों के लिए मसनून दुआओं का तर्जुमा पढ़कर दुआ मांगना यक़ीनन अल्लाह तआला के कुर्ब का सबब होगा और इन्शाअल्लाह अज्र व सवाब ज़रूर मिलेगा। इसलिए कि वह अल्लाह तआला के हुक्म "اُدْعُوْنِيْ" (यानि मुझसे मांगो) पर अमल कर रहे हैं और हदीस "اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ" (दुआ ही बड़ी इबादत है) पर भी अमल कर रहे हैं और दुआ का मज़मून रसूलुल्लाह सल्ल० से साबित होने की वजह से जामेअ भी है और बे अदबी से पाक भी है इसलिए जो लोग अरबी पढ़ सकते हैं लेकिन मायना न जानते हों उनको भी तर्जुमा कभी कभी ज़रूर पढ़ लेना चाहिए ताकि उनको मालूम हो जाए कि वे क्या मांग रहे हैं फिर यह दुआ हकीकी दुआ (मांगना) बनेगी।

वल्लाहु आलमु बिस्सवाब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

اَذْكَارُ الصَّبَاح

सुबह के अज़कार

अफ़ज़ल यह है कि सुबह के अज़कार सुबह सादिक से सूरज तुलूअ होने तक पूरे कर लिए जाएं।

नोटः गुंजाइश यह है कि सुबह के अज़कार सुबह सादिक से दोपहर तक किसी भी वक़्त पूरे कर लें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

1 हर चीज़ से किफायत का नबवी नुसख़ा

सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास तीन बार पढ़ें।

سُوْرَۃُ اِخْلَاص

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ① اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ② لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ③ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠ ④

तर्जुमाः अप (इन लोगों से) कह दीजिए कि वे यानि अल्लाह एक है अल्लाह ही बेनियाज़ है उसके औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है और न कोई उसके बराबर है।

سُوْرَہ فَلَق   بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿۲﴾
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ
فِى الْعُقَدِ ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

तर्जुमाः आप कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूं तमाम मख़लूक़ की बुराई से और अंधेरी रात की बुराई से जब वह रात आ जाए और गिरहों में पढ़ पढ़ कर फूंकने वालियों की बुराई से, और हसद करने वाले की बुराई से जब वे हसद करने लगे।

سُورَةُ نَاسٍ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۵ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

तर्जुमाः आप कहिए कि मैं आदमियों के मालिक, आदमियों के बादशाह, आदमियों के माबूद की पनाह लेता हूं वसवसा डालने वाले पीछे हटने वाले (शैतान) की बुराई से जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है चाहे यह (वसवसा डालने वाला) जिन्नात में से हो या आदमियों में से हो।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सूरह इख़्लास, सूरह फलक़, सूरह नास सुबह के वक़्त तीन बार पढ़ ले। उसकी हर चीज़ से किफ़ायत हो जाएगी

(सही तिर्मिज़ी 3-172 अबुदाऊद 4-507)

2 नीचे वाली दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से

दुनिया व आख़िरत के कामों पर किफायत का नबवी नुसख़ा (सात बार पढ़ें)

"حَسْبِیَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ"

तर्जुमाः अल्लाह तआ़ाला ही मुझे काफी है उसके अलावा कोई इबादत के लाइक नहीं है उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम अर्श का मालिक है।

फज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ सात बार पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसके दुनिया व आख़िरत के कामों में किफायत करेगा।

* मज़कूरा दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए परेशानी दूर होगी। (हयातुस्सहाबा 3-242) (अख़रजा इब्नुस्सुन्नी फी अमल अलयवम वल्लैला बरक़म 37-72, अबु दाऊद 4-321 व असनाद जय्यद)

3 जहन्नम से बरअत का नबवी नुसखा

(चार बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلآئِكَتَكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لآ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैंने इस हालत में सुबह की है कि मैं आपको गवाह बनाता हूं और मैं गवाह बनाता हूं आपके अर्श उठाने वाले फरिश्तों को, और आपके तमाम फरिश्तों को और आपकी तमाम मख़लूक को कि यकीनन आप ही अल्लाह हैं आपके सिवा कोई माबूद नहीं है आप तन्हा हैं आपका कोठ साझी नहीं और यह बात यकीनी है कि मुहम्मद (सल्ल०) आपके बन्दे और रसूल हैं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त चार बार यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला जहन्नम से उसको आज़ाद फ़रमा देते हैं।
(अखरजा अबु दाऊद 4-317, बुखारी फी अदबुल मफ़रद रक़मः 12-1)

4 अपने लिए अल्लाह की नेमतों को मुकम्मल फ़रमाने का नबवी नुसख़ा

(तीन बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَصْبَحْتُ مِنْكَ فِیْ نِعْمَةٍ وَّعَافِيَةٍ وَّسِتْرٍ فَاَتْمِمْ عَلَیَّ نِعْمَتَكَ وَعَافِيَتَكَ وَسِتْرَكَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह बेशक मैंने आपकी तरफ़ से आफ़ियत और पर्दापोशी की हालत में सुबह की, लिहाज़ा आप मुझ पर अपने इनाम और

अपनी आफ़ियत और अपनी पर्दापोशी दुनिया और आखिरत में मुकम्मल फरमाइए।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन बार यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस पर अपनी नेमत मुकम्मल कर देते हैं।

(अखरजा इब्नुस्सुन्नी फी अमल अलयवम वल्लैलत रक़मः 55)

5 दिन और रात की नेमतों का शुक्र अदा करने का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ مَآ اَصْبَحَ بِىْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह जो भी नेमत मेरे साथ या आपकी मख़लूक में से किसी के साथ सुबह के वक़्त हासिल है वह तन्हा आप ही की तरफ से है उनमें आप का कोई शरीक नहीं

है लिहाज़ा तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं और शुक्र गुज़ारी आप ही के लिए है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त एक बार पढ़ ले तो उसने उस दिन की नेमतों का शुक्र अदा कर लिया। (अखरजा अबु दाऊद 4-317)

6 रज़ाए इलाही हासिल करने का नबवी नुसखा

(तीन बार पढ़ें)

"رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا"

तर्जुमाः मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद सल्ल० के नबी होने पर खुश हूं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन बार पढ़ ले तो अल्लाह तआला (क़ियामत के दिन) उसको राज़ी कर देंगे।

(रवाह तिर्मिज़ी 3-141, अहमद 4-337)

7 दुनिया व आख़िरत की भलाई मांग लेने का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

"يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ"

तर्जुमा: ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ऐ मख़लूक़ात को काइम रखने वाले, मैं आपसे आपकी रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करता हूं। आप मेरे तमाम अहवाल ठीक कर दीजिए और मुझे एक बार आंख झपकने के बराबर मेरे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए।

फ़ज़ीलत: जो शख़्स इसे एक बार पढ़ ले तो गोया उसने दुनिया और आख़िरत की भलाइयां मांग ली।

(अख़रजा अल हाकिम व सहहा व वाफ़िक़हुज़्ज़हबी अन्ज़र सहीहुत्तर्ग़ीब व तर्हीब 273)

8 नागहानी मुसीबत से बचाव का नबवी नुस्ख़ा

(तीन बार पढ़ें)

"بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ"

तर्जुमा: अल्लाह के नाम के साथ मैंने सुबह की जिसके नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाती ज़मीन में और न आसमान में और वही खूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है।

फ़ज़ीलत: जो शख़्स इस दुआ को तीन बार पढ़ ले तो कोई चीज़ उसको मुज़र्रत (नुक़्सान) नहीं पहुंचाएगी और अबु दाऊद की रिवायत में है कि उसको नागहानी मुसीबत नहीं पहुंचेगी। (अखरजा अबु दाऊद व तिर्मिज़ी व काला हदीस हसन सहीह)

9 जब किसी ख़बर का इन्तिज़ार हो

(एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فُجَآءَةِ الْخَيْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فُجَآءَةِ الشَّرِّ"۔

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं आपसे अचानक की भलाई का सवाल करता हूं और अचानक की बुराई से आपकी पनाह मांगता हूं।

फ़ज़ीलतः जब कसी मामले में कोई ख़बर मिलने वाली हो या कोई नया वाकिआ पेश आने वाला हो तो यह दुआ करे जो मज़कूर है। हदीस में है कि हुजूर सल्ल० सुबह के वक़्त यह दुआ किया करते थे।

(किताबुल अज़कार 104)

10 अल्लाह की पाकी और हम्द बयान करने का नबवी नुसख़ा (तीन बार पढ़ें)

"سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ"

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब और मैं अल्लाह की हम्द बयान करता हूं उसकी की हुई हम्द के साथ उसकी मखलूक़ की गिनती के बराबर और उसकी अपनी खुशी के बराबर और उसके अर्श के वज़न के बराबर और उसके कलिमात के बराबर।

मज़कूरा दुआ सुबह के वक़्त तीन बार पढ़ लीजिए।
(अखरजा मुस्लिम 4-2090)

11 बदन की आफ़ियत का नबवी नुसख़ा

(तीन बार पढ़ें)

اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ
سَمْعِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَصَرِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ
اَنْتَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मेरे बदन को ठीक रखिए, ऐ अल्लाह मेरे कान आफ़ियत से रखिए, ऐ अल्लाह मेरी आंख आफ़ियत से रखिए। आपके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है। ऐ अल्लाह मैं कुफ़्र और मोताजगी से आप की पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अज़ाब से आपकी पनाह मांगता हूं आपके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है।

फ़ज़ीलतः सुबह के वक़्त तीन बार पढ़ लीजिए अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि मजकूरा दुआ जो पढ़ेगा अल्लाह उसे हर लाइन की आफ़ियत में रखेगा। हदीस की दुआ का तर्जुमा बहुत ग़ौर से पढ़िए।

(अबु दाऊद वन्नज़र सहीह इब्न माजा 3-241)

12वसावसे शैतान से हिफ़ाज़त का नबवी नुसखा

(एक बार पढ़ें)

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْٓءًا اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ۔"

तर्जुमा: ऐ अल्लाह आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाले हर चीज़ के परवरदिगार और हक़ीक़ी मालिक। मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आपके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है। मैं आपके ज़रिए मेरे नफ़स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से पनाह मांगता हूं और इससे पनाह मांगता हूं कि कोई बुराई करूं जिस का वबाल मेरे

नफ़्स पर पड़े या किसी मुसलमान को कोई बुराई पहुंचाऊं

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त इस दुआ को पढ़ ले वसावसे शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है। (अबु दाऊद सहीह तिर्मिज़ी 3-4)

13 जन्नत में दाखिल होने का नबवी नुसखा

(एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْٓءُ لَكَ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप ही मेरे पालनहार हैं आपके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है आप ही

ने मुझे पैदा किया और मैं आपका हकीकी गुलाम हूं और जहां तक मेरे बस में है मैं आपसे किए हुए और अहद पर कायम हूं आपकी पनाह चाहता हूं उन तमाम बुरे कामों के वबाल से जो मैंने किए हैं। मैं आपके सामने आपकी इन नेमतों का इकरार करता हूं जो मुझ पर हैं और मुझे एतेराफ़ है अपने गुनाहों का इसलिए मेरे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए। क्योंकि आपके सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्शता।

फ़ज़ीलत: जो शख़्स यकीन के साथ यह दुआ सुबह के वक़्त पढ़ ले और उसी दिन उसका इन्तिकाल हो जाए तो जन्नत में दाखिल होगा। (बुख़ारी 11-97-98)

14 हर किस्म की आफ़ियत का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़ें)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ
الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ
وَمَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَاٰمِنْ
رَوْعَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَيْنِ يَدَیَّ
وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ يَّمِيْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ
فَوْقِیْ وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ

तर्जुमा: ऐ अल्लाह मैं आपसे आफ़ियत मांगता हूं दुनिया और आखिरत में, ऐ अल्लाह मैं आपसे माफ़ी और सलामती मांगता हूं मेरे दीन में और मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में, ऐ अल्लाह ढांप ले मेरे ऐब और खौफ की चीजों से मुझे बे फ़िक्र कर दे। ऐ अल्लाह मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और (मैं आपकी अज़मत की पनाह लेता हूं इससे कि

हलाक किया जाऊं। मेरे नीचे से।)

दुआ का तर्जुमा खूब ग़ौर से पढ़िए

फ़ज़ीलत: हर किस्म की आफ़ियत का नबवी नुसख़ा है।

(अखरजा अबु दाऊद व अन्ज़र सहीह इब्ने माजा 2-337)

15 ज़वाले ग़म और अदाएगी कर्ज़ का नबवी वज़ीफ़ा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡهَمِّ وَالۡحَزَنِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡعَجۡزِ وَالۡكَسَلِ، وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡجُبۡنِ وَالۡبُخۡلِ، وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ غَلَبَةِ الدَّيۡنِ وَقَهۡرِ الرِّجَالِ"

तर्जुमा: ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह मांगता हूं। फिक्र और रंज से और में आपकी पनाह मांगता हूं कम हिम्मती और सुस्ती से और मैं

आपकी पनाह मांगता हूं बुज़दिली और बखीली से और मैं आपकी पनाह मांगता हूं कर्ज़ के बोझ और लोगों के दबाने से।

फज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ ले तो उसका ग़म ख़त्म हो जाएगा और उसका कर्ज़ अदा हो जाएगा।

नोट (लफ्ज़ अल हज़न और अल हुज़्न दोनों ही सही हैं।)

(अख़रजा अबु दाऊद बाब फ़िल इस्तिआज़ा) व हुवा आख़िर हदीस मिन किताबु स्सलात काला शोकाफी फी तोहफतुज्ज़ाकिरीन वला मुतअन फी असनाद हाज़ल हदीस)

16 इल्म नाफेअ और रिज़्क हलाल मिलने का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا طَيِّبًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं आपसे नफ़ा देने वाला इल्म और पाक रोज़ी और कुबूल होने वाला अमल मांगता हूं।

नमाज़े फज्र में बाद सलाम पढ़ें (सही इब्ने माजा 1-15 सही अज़्ज़वाइद 2-111)

17 जहन्नम से खलासी पाने का नबवी नुसख्वा

(सात बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप मुझे हजन्नम की आग से बचा लीजिए।

फ़ज़ीलतः जब सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं तो किसी से बात करने से पहले सात बार यह दुआ पढ़ लें अगर उसी दिन वफ़ात पा गया तो जहन्नम से छुटकारा नसीब होगा।

(व काला शोकाफी फी तोहफतुज़्ज़ाकिरीन अखरजा अबुदाऊद, नसाई व सहहह इब्ने हिबान)

18 अल्लाह से उसकी शान के मुताबिक अज्र लेने का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

"يَارَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِيْ لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِكَ"

तर्जुमाः ऐ मेरे परवरदिगार हकीकी तारीफ आप ही के लिए है जैसी तारीफ़ आपकी ज़ात की बुजूर्गी और आपकी अज़ीम सलतनत के लाइक हो।

फज़ीलतः जब बन्दए खुदा यह दुआ पढ़ता है तो अल्लाह तआला उसकी शान के मुताबिक अज्र देगा।

(रवाह अहमद व इब्ने माजा व रिजाला सक़ात)

19 मुसीबतों से नजात हासिल करने का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ، عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ“

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप ही मेरे पालने वाले हैं आपके सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं है आप ही पर मैंने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं। जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों को करने की ताकत अल्लाह की मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला अज़मत वाला है मैं यकीन करता हूं कि

अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह कि अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को मुहीत है। ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह मांगता हूं मेरे नफ़स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिसकी पेशानी आपके कब्ज़ा में है। बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स दिन के शुरू में इसे पढ़कर ले तो उसको शाम तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी। (रवाह इब्नुसुन्नी व अबु दाऊद अन बाअज़ बिनातुन्नबी सल्ल०)

20 बेहतरीन रिज़्क पाने का और बुराईयों से महफ़ूज़ रहने का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़ें)

مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ"

तर्जुमाः जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ। गुनाह से बचने और नेकी करने की ताक़त अल्लाह की मदद ही से मिलती है मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़े तो उस दिन बेहतरीन रिज़्क से नवाज़ा जाएगा और बुराईयों से महफ़ूज़ रहेगा।
(इब्नुस्सुन्नी कन्जुल.आमाल 6-21)

21 हुजूर सल्ल० के हाथों जन्नत में दाखिला
(एक बार पढ़ें)

"رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا
وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا"

तर्जुमाः मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद (सल्ल०) के नबी होने पर

खुश हूं।

फ़ज़ीलत: जो शख़्स सुबह के वक़्त एक बार यह दुआ पढ़ ले हुज़ूर सल्ल० इसका हाथ पकड़ कर जन्नत में दाखिल कराएंगे।

(रवाह तिबरानी ब असनाद हसन फी सवाब अमलुस्सालेह 321 बिखेर मोती जुज़ 4 सफा 35)

22 ज़िक्र के मामूलात की कमी की तलाफ़ी का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

فَسُبۡحٰنَ اللّٰہِ حِیۡنَ تُمۡسُوۡنَ وَحِیۡنَ تُصۡبِحُوۡنَ ○ وَلَہُ الۡحَمۡدُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَعَشِیًّا وَّحِیۡنَ تُظۡہِرُوۡنَ ○ یُخۡرِجُ الۡحَیَّ مِنَ الۡمَیِّتِ وَیُخۡرِجُ الۡمَیِّتَ مِنَ الۡحَیِّ وَیُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا ؕ وَکَذٰلِکَ تُخۡرَجُوۡنَ ○ (الروم: ١٧ تا ١٩)

तर्जुमाः तुम अल्लाह की पाकी बयान करो उसकी शान के लाइक़ सुबह और शाम के वक़्त और दिन के आखिरी हिस्से में और दोपहर के वक़्त और हकीकी तारीफ़ अल्लाह ही के लाइक़ है आसमानों और ज़मीन में वह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और वह ज़मीन को उसके खुश्क हो जाने के बाद जिन्दा करता है और (ऐ लोगो आखिरत में) इसी तरह तुम को (कब्रों से) निकाला जाएगा।

फ़ज़ीलतः एक बार सुबह पढ़ने से ज़िक्र के मामूल में कमी की तलाफ़ी हो जाती है अबु दाऊद मुसनद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया मैं तुम्हें बताऊं कि खुदा तआला ने हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का नाम खलील वफादार क्यों रखा? इसलिए कि वे सुबह व शाम इन कलिमात को तुज़हिरून तक पढ़ा करते थे। (इब्ने कसीर 2-66)

23 हर बला से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़े)

आयतल कुर्सी पढ़कर फिर सूरह मोमिन की नीचे की तीन आयतें सुबह के वक़्त पढ़ ले।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ○

तर्जुमाः अल्लाह वह ज़ात है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है,

तमाम मख़लूक का संभालने वाला है न उसको ऊंघ दबा सकती है और न नींद (दबा सकती है) उसी के मलूक हैं सब जो कुछ भी आसमानों में (मौजूदात) हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं ऐसा कौन शख़्स है जो उसके पास (किसी की) सिफारिश कर सके सिवाए उसकी इजाज़त के वह जानता है उन (मौजूदात) के तमाम हाज़िर और ग़ायब हालात को और वह मौजूदात उसके मालूमात से किसी चीज़ को अपने इल्म के अहाते में नहीं ला सकते मगर जिस क़दर (इल्म देना) वही चाहे उसकी कुर्सी (इतनी बड़ी है कि उस) ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है और अल्लाह तआला को इन दोनों (आसमान और ज़मीन) की हिफाज़त कुछ मुश्किल नहीं गुज़रती और वही आलीशान और अज़ीमुश्शान है। (बयानुल कुरआन)

सूरह मोमिन की इब्तिदाइ तीन आयतें
(एक बार पढ़ें)

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۲﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۳﴾

तर्जुमाः यह किताब उतारी गयी है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है हर चीज़ का जानने वाला है गुनाह बख़्शने वाला है और तौबा क़ुबूल करने वाला है सख़्त सज़ा देने वाला है क़ुदरत वाला है उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उसी के पास सबको जाना है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स "आयतल कुर्सी" पढ़कर फिर "सूरह मोमिन" की मज़कूरा तीन आयतें सुबह के वक़्त पढ़ ले वह उस दिन हर बुराई

और तकलीफ़ से महफ़ूज़ रहेगा।

(मुसनद बज़ार अन अबी हुरैरह व रवाह तिर्मिज़ी, बाक़ी हवाले बिखरे मोती जुज़ 4 में देख लें)

24 फ़रिश्तों की दुआओं के मुस्तहिक़ बनने का और मौत पर शहादत का अज्र मिलने का नबवी नुसख़ा (तीन बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ"

तर्जुमा: मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जो ख़ूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है मर्दूद शैतान से।

هُوَ اللّٰہُ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ ۚ ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ ھُوَ اللّٰہُ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ۚ اَلْمَلِکُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُھَیْمِنُ

الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾ (سورة الحشر)

तर्जुमाः वह ऐसा है कि उसके सिवा कोई और माबूद (बनने के लाइक़) नहीं, वह जानने वाला है पोशीदा चीज़ों का और ज़ाहिरी चीज़ों का वही बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है वह ऐसा अल्लाह है कि उसके सिवा कोई और माबूद (बनने के लाइक़) नहीं, वह बादशाह है (सब ऐबों से) पाक है सालिम है अम्न देने वाला है (अपने बन्दों को खौफ़ की चीज़ों से) निगहगानी करने वाला है ज़बरदस्त है खराबी का दुरुस्त कर देने वाला है बड़ी अज़मत वाला है अल्लाह तआला लोगों के

शिर्क से पाक है वह माबूद (बरहक़) है पैदा करने वाला है ठीक ठीक बनाने वाला है सूरत (शक्ल) बनाने वाला है। उसी के अच्छे अच्छे नाम हैं सब चीज़ें उसी की पाकी बयान करती हैं जो आसमानों और ज़मीनों में है और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (एक बार पढ़ें)

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह को अरबी तीन बार पढ़कर मज़कूरा आयतें एक बार पढ़ ले तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते रहमत की दुआ करते हैं और उस दिन मरने पर शहादत का अज्र मिलता है। (तिर्मिज़ी)

25 सारे मुतालबों के पूरा होने का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنْتَ تَهْدِيْنِيْ

وَاَنْتَ تُطْعِمُنِيْ وَاَنْتَ تَسْقِيْنِيْ

وَاَنْتَ تُمِيْتُنِيْ وَاَنْتَ تُحْيِيْنِيْ

ऐ अल्लाह आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं और आप ही मुझे खिलाते हैं और आप ही मुझे पिलाते हैं और आप ही मुझे मारेंगे और आप ही मुझे ज़िन्दा करेंगे।

फ़ज़ीलतः हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत सुमरह बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊं जो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से कई बार सुनी और हज़रत अबु बकर और हज़रत उमर रज़ि० ने कई बार सुनी है। मैंने कहा ज़रूर सुनाएं। हज़रत सुमरह रज़ि० ने फ़रमाया जो शख़्स सुबह और शाम इन कलिमात को पढ़े तो अल्लाह तआला से जो मांगेगा अल्लाह तआला ज़रूर उसको अता फ़रमाएंगे।

(हवाला बिखरे मोती जुज़ 1-144-145 में देखें)

26 जिन्नात की शरारत से बचने के लिए नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِيْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّ مَا ذَرَاَ فِي الْاَرْضِ وَشَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ"

तर्जुमा: मैं अल्लाह की करीम ज़ात की और अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं जिन कलिमात से आगे नहीं बढ़ता कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान से उतर आयी हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से

जो आसमान में चढ़ती हैं और उन तमाम चीजों की बुराई से जो ज़मीन में फैली हैं और उन तमाम चीजों की बुराई से जो ज़मीन से निकलती हैं और रात और दिन के फ़ित्नों से और रात और दिन में खटखटाने वालों से, मगर वह खटखटाने वाला जो भलाई के साथ खटखटाता हो ऐ बेहद मेहरबान!

फ़ज़ीलतः इस दुआ के पढ़ने की वजह से रसूलुल्लाह सल्ल० को तकलीफ़ पहुंचाने क़ी नीयत से आने वाला जिन्न मुंह के बल गिर पड़ा। (मोता इमाम मालिक रहिम०)

27 आसेब व सहर वग़ैरह से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा (तीन बार पढ़ें)

"اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِیْ یُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ

شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وَمِنْ شَرِّ
الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ"

तर्जुमाः अल्लाह के लिए हमने सुबह की और पूरी सलतनत ने सुबह की। तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है, पनाह लेता हूं अल्लाह की जिसने आसमान को रोके रखा कि वह ज़मीन पर गिरे मगर उसकी इजाज़त से मखलूक की बुराई से और जो फैली है और शैतान की शरारतों और उसके शिर्क से।

फज़ीलतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस से आप सल्ल० ने फरमाया कि अगर तुमने इस (मज़कूरा) दुआ को तीन बार सुबह के वक़्त पढ़ लिया तो शाम तक शैतान काहिन और जादूगर के नुक़सान से महफूज़ रहोगे। (अद दुआ 945, इब्नुस्सुन्नी 66, मजमआ 1-19)

28 जादू से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ الَّذِیْ لَیْسَ شَیْءٌ اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِیْ لَا یُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ وَّبِاَسْمَآءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰی كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ"

तर्जुमाः मैं अल्लाह की अज़ीम ज़ात की पनाह मांगता हूं कि जिससे कोई चीज़ बड़ी नहीं है (और पनाह मांगता हूं) अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की जिनसे आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स, (और मैं पनाह मांगता हूं) अल्लाह के तमाम अच्छे नामों की जो मुझे मालूम है और जो

मुझे मालूम नहीं हैं उन तमाम चीजों की बुराई से जो उसने पैदा की और ठीक बनाई और फैलायी।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त एक बार यह दुआ पढ़ ले इन्शाअल्लाह जादू से हिफ़ाज़त में रहेगा। हज़रत कअब अहबार रहिम० फ़रमाते हैं कि अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूदी मुझे जादू के ज़ोर से गधा बना देते। (मोता इमाम मालिक रहिम०)

29 गुनाहों को माफ़ करवाने और नेकियां हासिल करने का नबवी नुसख़ा। ([illegible] बार पढ़ें)

"سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ"

तर्जुमा : मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लाइक़ और उसकी तारीफ़ करता हूं उसकी बयान की हुई तारीफ़ के साथ।

फ़ज़ीलत : इन कलिमात को सौ बार पढ़ लें। समन्द्र के झाग के बराबर भी गुनाह होंगे तो अल्लाह

तआला माफ फरमा देंगे।

(सही मुस्लिम 4-17-20)

और एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां मिलेंगी।

(तिर्मिज़ी)

30 तीन बड़ी बीमारियों से बचने का नबवी नुसखा। (फज्र की नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ें)

"سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ"

"اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِمَّا عِنْدَكَ وَاَفِضْ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَيَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ"

(एक बार पढ़ें)

तर्जुमा : मैं बड़ी अज़मत वाले अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ उस की शान के मुनासिब और उसकी तारीफ करता हूँ उसी की बयान कर्दा तारीफ के साथ। ऐ अल्लाह उन नेमतों में से मांगता हूँ जो तेरे पास हैं और अपने

फ़ज़्ल व करम की मुझ पर बारिश कर और रहमत मुझ पर फैला दे और अपनी बरकत मुझ पर नाज़िल कर दे।

फ़ज़ीलत : हज़रत कबीसा बिन मख़ारिक़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा क्यों आए थे? मैंने अर्ज़ किया मेरी उम्र ज़्यादा हो गयी है मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गयी हैं यानि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मैं आप सल्ल० की ख़िदमत में इसलिए हाज़िर हुआ हूँ ताकि आप मुझे वह चीज़ सिखाएं जिससे अल्लाह तआला मुझे नफ़ा दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम जिस पत्थर, पेड़, और ढेले के पस से गुज़रे हो उसने तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की है ऐ कबीसा सुबह की नमाज़ के बाद तीन बार...

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ कहो। इससे तुम अंधेपन, कोढ़ी और फ़ालिज से महफ़ूज़

रहोगे। ऐ कबीसा! यह दुआ भी पढ़ा करो.

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِمَّا عِنْدَكَ وَاَفِضْ عَلَیَّ مِنْ فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَیَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ۔

(बिखरे मोती 1-95)

31 जिन्नात की शरारत से बचने का नुसख़ा।

(एक बार पढ़ें)

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

तर्जुमाः क्या तुम यह गुमान किए हुए हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौटाए ही न जाओगे। अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है वह बड़ी बुलन्दी वाला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही बुजुर्ग अर्श का मालिक है जो शख़्स अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को पुकारे जिसकी कोई दलील उसके पास नहीं, पस उसका हिसाब तो उसके रब के पास ही है। बेशक काफ़िर लोग नजात से महरूम हैं और कहो कि ऐ मेरे रब! तू बख़्श और रहम कर और तू सब मेहरबानों से बेहतर मेहरबानी करने वाला है।

फज़ीलतः इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के पास आया तो आप (रज़ि०) ने मज़कूरा आयत पढ़ कर उसके कान में दम किया। वह अच्छा हो

गया। जब नबी करीम सल्ल० से इसका ज़िक्र किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया– 'अब्दुल्लाह तुमने उसके कान में क्या पढ़ा था।' आप रज़ि० ने बतला दिया। तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया– 'तुमने ये आयतें उसके कान में पढ़ कर उसे जला दिया। अल्लाह की क़सम इन आयतों को अगर कोई ईमान वाला शख़्स यक़ीन के साथ किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से टल जाए।'

अबू नईम ने रिवायत नक़ल की है कि हमें रसूले करीम सल्ल० ने एक लश्कर में भेजा और फ़रमाया कि हम सुबह व शाम मज़कूरा आयतें तिलावत फ़रमाते रहें तो हमने बराबर इसकी तिलावत दोनों वक़्त जारी रखीं। अलहम्दुलिल्लाह हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लौटे।

(तफ़सीर इब्ने कसीर 4-374, बिखरे मोती 11-15)

(٣٢) "اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا
وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ"

तर्जुमा : ऐ अल्लाह हमें आप ही की तौफ़ीक़ से सुबह नसीब हुई और आप ही की तौफ़ीक़ से शाम मिली। आप ही की कुदरत से हम जीते हैं और आप ही की कुदरत से मरेंगे और आप की ही तरफ़ लौट कर जाना है।

(तिर्मिज़ी)

33

"اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ فَتْحَهٗ وَنَصْرَهٗ وَنُوْرَهٗ وَبَرَكَتَهٗ وَهُدَاهُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ۔ (ایک بار پڑھیں)

(एक बार पढ़ें)

तर्जुमाः हमारी सुबह हो गयी और अल्लाह रब्बुल आलमीन के मुल्क की सुबह हो गयी। ऐ अल्लाह मैं आप से उस दिन की भलाई और उसकी फ़तह और कामयाबी और नूर और उसकी बरकत और उसकी हिदायत मांगता हूँ और उस दिन और इसके बाद के शर से आप की पनाह मांगता हूँ। (एक बार पढ़ें) (हिस्ने हसीन) (पुरनूर दुआ 32)

34

"اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوَّلَ هٰذَا النَّهَارِ صَلَاحًا وَّاَوْسَطَهٗ فَلَاحًا وَّاٰخِرَهٗ نَجَاحًا ، اَسْئَلُكَ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ"

तर्जुमा : ऐ अल्लाह उस दिन के अव्वल हिस्से की नेकी बनाइए, दर मयानी हिस्से को हिस्से को फ़लाह का ज़रिया और आख़िरी हिस्से को कामयाबी, या अरहमुर्राहिमीन मैं दुनिया व

आख़िरत की भलाई आपसे मांगता हूँ। (एक बार पढ़ें) (हिस्ने हसीन-75)

35 "اَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ"

तर्जुमाः हमने सुबह की फ़ितरत इस्लाम पर कलिमाए इख़्लास पर और अपने महबूब नबी सल्ल० के दीन पर और अपने जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) की मिल्लत पर जो तौहीद वाले और मुसलमान थे और मुश्रिकों में से न थे। (हिस्ने हसीन-70)

36 पांच जुमले दुनिया के लिए, पांच आख़िरत के लिए।

दुनिया

(एक बार पढ़ें)

① حَسْبِیَ اللّٰہُ لِدِیْنِیْ

1 काफ़ी है अल्लाह मुझको मेरे दीन के लिए

② حَسْبِیَ اللّٰہُ لِمَآ اَھَمَّنِیْ

2 काफ़ी है मुझको अल्लाह मेरे कुल फ़िक्र के लिए।

③ حَسْبِیَ اللّٰہُ لِمَنْ بَغٰی عَلَیَّ

3 काफ़ी है मुझको अल्लाह उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ज़्यादती करे।

④ حَسْبِیَ اللّٰہُ لِمَنْ حَسَدَنِیْ

4 काफ़ी है मुझको अल्लाह उस शख़्स के लिए जो मुझ पर हसद करे।

⑤ حَسْبِیَ اللّٰہُ لِمَنْ کَادَنِیْ بِسُوْٓءٍ

5 काफ़ी है मुझको अल्लाह उस शख़्स के लिए जो बुराई के साथ मुझे धोखा और फ़रेब दे।

आख़िरत

(एक बार पढ़ें)

(١) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ

1 काफ़ी है मुझको अल्लाह, मौत के वक़्त

(٢) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَسْئَلَةِ فِي الْقَبْرِ

2 काफ़ी है मुझको अल्लाह क़ब्र में सवाल के वक़्त

(٣) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ

3 काफ़ी है मुझको अल्लाह मीज़ान के पास (यानि उस तराज़ू के पास जिसमें नामाए आमाल का वज़न होगा।)

(٤) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ

4 काफ़ी है मुझको अल्लाह पुलसिरात के पास

(٥) حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ

5 काफ़ी है मुझको अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैंने उसी पर तवक्कुल किया

और मैं उसी की तरफ़ रुजू होता हूँ।

फ़ज़ीलतः हज़रत बरीदह रज़ि० से मर्वी है जिसका मफ़हूम यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख़्स मज़कूरा दस कलिमात को सुबह के वक़्त पढ़ ले तो वह शख़्स इस कलिमात को पढ़ते ही अल्लाह तआला को उसके हक़ में काफ़ी और कलिमात पढ़ने पर अज्र व सवाब देते हुए पाएगा।

(दुर्रे मन्सूर 2-103)

37 सौ मर्तबा तीसरा कलिमा पढ़ लीजिए।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

38 सौ मर्तबा इस्तग़फ़ार पढ़ लीजिए

"اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ"

یا "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ" بھی پڑھ سکتے ہیں

39 सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए

बेहतर यह है कि पढ़ा जाने वाला दुरूद दुरूदे इबराहीमी हो जो नमाज़ में पढ़ा जाता है लेकिन अगर मुख़्तसर दुरूद पढ़ना है तो नीचे दिया हुआ पढ़ लीजिए। वह यह है---

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

40 सौ बार पढ़ लीजिए

يَا اَللّٰهُ يَا حَفِيْظُ

41 तीन बार पढ़ लीजिए

"فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ"

तर्जुमा : अल्लाह बेहतर मुहाफ़िज़ है और वह तमाम रहम करने वालों में ज़्यादा रहम करने वाला है।

पांच सौ बार या सौ बार. "يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ". पढ़ लीजिए इन्शा अल्लाह बहुत बहुत बहुत फ़ायदा होगा।

42 एक बार सूरह यासीन पढ़ लीजिए।

43 एक बार सूरह मुज़म्मिल पढ़ लीजिए।

44 एक मर्तबा अल्लाह के 99 नाम पढ़ लीजिए।

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا

और अल्लाह के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं सो तुम (हमेशा) उसको अच्छे नामों से पुकारो।

नोटः अगर कोई अरबी असमाए हुसना पढ़ने से आजिज़ हो तो उनका तर्जुमा समझ कर पढ़ लिया करे और अल्लाह तआला के उन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ जाने और माने। इन्शा अल्लाह उसको भी असमाए हुसना के फ़ायदे व बरकतें हासिल होगी।

(मुरत्तिब)

अल्लाह तआला के 99 नाम मय तर्जुमा

1	هُوَاللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ	वही अल्लाह यानी हक़ीक़ी माबूद है उसके सिवा कोई माबूद नहीं
2	اَلرَّحْمٰنُ	बड़ा मेहरबान है
3	اَلرَّحِيْمُ	निहायत रहम वाला है
4	اَلْمَلِكُ	तमाम जहानों का बादशाह है
5	اَلْقُدُّوْسُ	निहायत पाक
6	اَلسَّلَامُ	और तमाम कमज़ोरियों व उयूब से पाक है

7	اَلْمُؤْمِنُ	अम्न व अमान देने वाला है
8	اَلْمُهَيْمِنُ	तमाम मख़्लूक़ की निगहबानी करने वाला है
9	اَلْعَزِيْزُ	कामिल ग़लबा वाला है कभी किसी से मग़लूब नहीं होता
10	اَلْجَبَّارُ	बिगड़े हुए कामों और हालात को ठीक करने वाला है
11	اَلْمُتَكَبِّرُ	बड़ी अज़मत वाला है
12	اَلْخَالِقُ	जान डालने वाला है
13	اَلْبَارِئُ	और पैदा करने वाला है
14	اَلْمُصَوِّرُ	सूरत बनाने वाला है

15	اَلْغَفَّارُ	बहुत माफ़ करने वाला है
16	اَلْقَهَّارُ	सबको क़ाबू में रखने वाला है
17	اَلْوَهَّابُ	बहुत देने वाला है
18	اَلرَّزَّاقُ	खूब रोज़ी पहुंचाने वाला है
19	اَلْفَتَّاحُ	फ़तह बख़्श और रिज़्क़ व रहमत के दरवाज़े खोलने वाला है
20	اَلْعَلِيْمُ	खूब जानने वाला है
21	اَلْقَابِضُ	रोज़ी तंग करने वाला है
22	اَلْبَاسِطُ	और रोज़ी कुशादा करने वाला है
23	اَلْخَافِضُ	(ना फ़रमानों की) पस्त

करने वाला

24	اَلرَّافِعُ	(और नेकों कारों को) बुलन्द करने वाला
25	اَلْمُعِزُّ	(मुसलमानों को) इज़्ज़त देने वाला
26	اَلْمُذِلُّ	(और काफ़िरों को) ज़लील व रुसवा करने वाला है
27	اَلسَّمِيْعُ	खूब सुनने वाला
28	اَلْبَصِيْرُ	सबको देखने वाला
29	اَلْحَكَمُ	और सबका हाकिम
30	اَلْعَدْلُ	निहायत इन्साफ़ पर्वर
31	اَللَّطِيْفُ	बड़ा बारीक बी और बन्दों

पर नर्मी करने वाला है

32	اَلْخَبِيْرُ	बड़ा बाख़बर
33	اَلْحَلِيْمُ	बड़ा बुर्दबार
34	اَلْعَظِيْمُ	और अज़मत वाला है
35	اَلْغَفُوْرُ	बहुत बख़्शने वाला है
36	اَلشَّكُوْرُ	और बड़ा क़द्र दां यानि थोड़े अमल पर बहुत ज़्यादा सवाब देने वाला है
37	اَلْعَلِيُّ	बहुत बुलन्द
38	اَلْكَبِيْرُ	और बहुत बड़ा
39	اَلْحَفِيْظُ	सबकी हिफ़ाज़त करने वाला
40	اَلْمُقِيْتُ	और ग़िज़ा बख़्श है

41	اَلْحَسِيْبُ	हिसाब लेने वाला
42	اَلْجَلِيْلُ	बड़ी शान वाला
43	اَلْكَرِيْمُ	बड़ा सख़ी
44	اَلرَّقِيْبُ	और खूब निगहबानी करने वाला
45	اَلْمُجِيْبُ	सबकी दुआएं सुनने और कुबूल करने वाला है
46	اَلْوَاسِعُ	बड़ी वुसअत वाला है
47	اَلْحَكِيْمُ	और बड़ी हिक्मत वाला है
48	اَلْوَدُوْدُ	(नेक बन्दों से) बेहद मौहब्बत करने वाला
49	اَلْمَجِيْدُ	बड़ा बुज़ुर्ग
50	اَلْبَاعِثُ	और मुर्दों को ज़िन्दा करने

वाला है

51	اَلشَّهِيْدُ	हाज़िर व नाज़िर
52	اَلْحَقُّ	और साबित व बरहक़ है
53	اَلْوَكِيْلُ	बड़ा कारसाज़
54	اَلْقَوِىُّ	बड़ी कुव्वत वाला
55	اَلْمَتِيْنُ	और मज़बूत इक़्तिदार वाला है
56	اَلْوَلِىُّ	(नेकों कारों का) मददगार
57	اَلْحَمِيْدُ	तमाम खूबियों का मालिक
58	اَلْمُحْصِىُ	खूब शुमार करने वाला और घबराने वाला है
59	اَلْمُبْدِئُ	पहली बार पैदा करने वाला

60	اَلْمُعِيْدُ	और दोबारा जिन्दा करने वाला है
61	اَلْمُحْيِيْ	जिन्दगी बख्शने वाला
62	اَلْمُمِيْتُ	और मौत देने वाला है
63	اَلْحَيُّ	हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है
64	اَلْقَيُّوْمُ	और खूब थामने वाला है
65	اَلْوَاجِدُ	ऐसा ग़नी व बेनियाज़ है कि किसी चीज़ का मोहताज नहीं।
66	اَلْمَاجِدُ	बुजुर्गी वाला
67	اَلْوَاحِدُ	अपनी ज़ात व सिफ़ात में यक्ता
68	اَلصَّمَدُ	बड़ा बेनियाज़

69	اَلْقَادِرُ	और बड़ी कुदरत वाला है
70	اَلْمُقْتَدِرُ	कुदरते कामिला रखने वाला
71	اَلْمُقَدِّمُ	(नेको कारों को) आगे करने वाला
72	اَلْمُؤَخِّرُ	(और बदकारों को) पीछे करने वाला
73	اَلْاَوَّلُ	सबसे पहला
74	اَلْاٰخِرُ	सबसे पिछला
75	اَلظَّاهِرُ	खूब नुमायां
76	اَلْبَاطِنُ	और निहायत पोशीदा है
77	اَلْوَالِیْ	सब पर हुकूमत करने वाला
78	اَلْمُتَعَالِیْ	बहुत बुलन्द व बरतर

79	اَلْبَرُّ	और नेक सुलूक करने वाला
80	اَلتَّوَّابُ	तौबा कुबूल करने वाला
81	اَلْمُنْتَقِمُ	बदला लेने वाला
82	اَلْعَفُوُّ	बहुत माफ करने वाला
83	اَلرَّءُوْفُ	और खूब शफकत करने वाला
84	مَالِكُ الْمُلْكِ	सारे जहां का मालिक
85	ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ	अज़मत व जलाल और इनाम व इकराम वाला है
86	اَلْمُقْسِطُ	अदल व इन्साफ करने वाला
87	اَلْجَامِعُ	(क्यामत के दिन) सबको

जमा करने वाला है

88	اَلْغَنِيُّ	बड़ा बे नियाज़
89	اَلْمُغْنِيُ	(और बन्दों को) बे नियाज़ करने वाला है
90	اَلْمَانِعُ	(हिलाकत के असबाब को) रोकने वाला
91	اَلضَّارُّ	नुक़सान पहुंचाने वाला
92	اَلنَّافِعُ	और नफ़ा पहुंचाने वाला
93	اَلنُّوْرُ	निहायत रोशन और सारे जहां को रोशन करने वाला
94	اَلْهَادِيْ	हिदायत देने वाला
95	اَلْبَدِيْعُ	बग़ैर नमूने के पैदा करने

वाला

96	اَلْبَاقِیْ	और हमेशा बाक़ी रहने वाला
97	اَلْوَارِثُ	तमाम चीज़ों का वारिस व मालिक है
98	اَلرَّشِیْدُ	सबका रहनुमा और सबको राहे रास्त दिखाने वाला है
99	اَلصَّبُوْرُ	बहुत बरदाश्त करने वाला और बड़ा बुर्दबार है

(तिर्मिज़ी शरीफ़ अबवाबुद दावात 2-189)

फ़ज़ीलतः बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है बेशक अल्लाह तआला

के 99 नाम हैं यानि एक कम सौ नाम हैं जिसने इनको महफ़ूज़ कर लिया (यानि इनको याद किया और इन पर ईमान लाया) वह जन्नत में पहुंच गया।

और असमाए हुसना की मुकम्मल तफ़सील (जिनका अभी ज़िक्र हुआ) क़वाइद व मआनी व ख़्वास के साथ बन्दे की किताब बिखरे मोती 3-93 से 204 पर मौजूद है वहां देख लें।

45 मौजूदा और आइन्दा दज्जाली फ़ित्नों से बचने का नबवी नुसख़ा।

(1) इमाम मुस्लिम रहिम० ने रिवायत किया है कि सूरह कहफ़ की शुरू की दस आयतें जो याद कर लेगा और पढ़ेगा वह दज्जाल के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा।

(2) सही मुस्लिम की एक और रिवायत में यूं है कि तुम में से जो शख़्स दज्जाल को पा ले तो उस पर सूरह कहफ़ की शुरू की आयतें

पढ़ दे (इसकी वजह से) वह दज्जाल से महफ़ूज़ रहेगा।

(3) कुछ रिवायतों में है कि सूरह कहफ की आखिरी आयतें याद करने से और पढ़ने से दज्जाल से हिफ़ाज़त रहेगी।

सूरह कहफ की शुरू की आयतें मय तर्जुमा (एक बार पढ़ें)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बड़े मेहरबान और सबसे ज़्यादा रहम करने वाले अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं।

1 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ﴿١﴾

तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिए सज़ावार हैं जिसने अपने बन्दे पर यह कुरआन उतारा और इसमें कोई कसर बाकी न

छोड़ी।

2

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ﴿۲﴾

बल्कि हर तरह से ठीक ठीक रखा ताकि अपने पास की सख़्त सज़ा से होशियार कर दे और ईमान लाने और नेक अमल करने वालों को खुशखबरियां सुना दे कि उनके लिए बेहतरीन बदला है।

3

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ﴿۳﴾

जिसमें वे हमेशा हमेशा रहेंगे।

4

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ﴿۴﴾

और उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह तआला औलाद रखता है।

5

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝٥

दर हकीकत न तो खुद उन्हें इसका इल्म है न उनके बाप दादों को। यह तोहमत बड़ी बुरी है जो उनके मुह से निकल रही है वे बड़ा झूठ बक रहे हैं।

6

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝٦

पस अगर ये लोग इस बात पर ईमान न लाएं तो क्या आप उनके पीछे इसी रंज में अपनी जान हलाक कर डालेंगे।

7

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ⑦

रूए ज़मीन पर जो कुछ है हमने उसे ज़मीन की रौनक़ का बाअिस बनाया है कि हम उन्हें आज़मा लें कि उनमें से कौन नेक आमाल वाला है।

8

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ⑧

उस पर जो कुछ है हम उसे एक हमवार साफ़ मैदान कर डालने वाले हैं।

9

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ⑨

क्या तू अपने ख़्याल में ग़ार और कतबे वालों को हमारी निशानियों में से कोई बहुत

अजीब निशानी समझ रहा है।

10

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ⑩

उन चन्द नवजवानों ने जब ग़ार में पनाह ली तो दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमें अपने पास से रहमत अता फ़रमा और हमारे काम में हमारे लिए राहयाबी को आसान कर दे।

सूरह कहफ़ की आख़िरी आयतें मय तर्जुमा (एक बार पढ़ें)

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ⑩٢

क्या काफ़िर यह ख़्याल किए बैठे हैं? कि मेरे सिवा वे मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लेंगे? सुनो हमने तो इन कुफ़्फ़ार की मेहमानी के लिए जहन्नम को तैयार कर रखा है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾

कह दीजिए कि अगर (तुम कहो तो) मैं तुम्हें बता दूं कि आमाल के एतेबार से सबसे ज़्यादा ख़सारे में कौन है?

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

वे हैं कि जिनकी दुनिया की ज़िन्दगी की तमाम तर कोशिशें बेकार हो गयीं और वह

इसी गुमान में रहे कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं।

○ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों और उसकी मुलाक़ात से कुफ़र किया इसलिए उनके आमाल ग़ारत हो गए पर क़ियामत के दिन हम उनका कोई वज़न काइम न करेंगे।

○ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

हाल यह है कि उनका बदला जहन्नम है क्योंकि उन्होंने कुफ़र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को मज़ाक़ में उड़ाया।

○ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने काम भी अच्छे किए यक़ीनन उनके लिए अल फ़िरदौस के बाग़ात की मेहमानी है।

○ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

जहां वे हमेशा रहा करेंगे। जिस जगह को बदलने का कभी भी उनका इरादा ही न होगा।

○ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

कह दीजिए कि अगर मेरे परवरदिगार की बातों के लिखने के लिए समन्दर सियाही

बन जाए तो यह भी मेरे रब की बातों के खत्म होने से पहले ही खत्म हो जाएगा गो हम उसी जैसा और भी उसकी मदद में ले आएं।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ج فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक इन्सान हूं (हां) मेरी तरफ़ वहय की जाती है कि सबका माबूद सिर्फ एक ही माबूद है तो जिसे भी अपने परवरदिगार से मिलने की आरज़ू हो उसे चाहिए कि नेक आमाल करे और अपने परवरदिगार की

इबादत में किसी को भी शरीक न करे।

नोटः आखिरी आयतें अल्लामां नववी ने शरह मुस्लिम में اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنْ يَّتَّخِذُوْا से बताइ हैं

तशरीहः इसकी तौज़ीह में हदीसों की शरह करने वालों ने लिखा है कि सूरह कहफ के इब्तिदाई हिस्से में जो तमहीदी मज़मून है और इसी के साथ असहाबे कहफ का जो वाकिआ बयान फरमाया गया है उसमें हर दज्जली फितने का पूरा तोड़ मौजद है और जिस दिल को इन हकाइक और मज़ामीन का यकीन नसीब हो जाए जो कहफ की इन इब्तिदाई आयतों में बयान किए गए हैं वह दिल किसी दज्जाली फ़ितना से कभी मुतास्सिर न होगा। इसी तरह अल्लाह के जो बन्दे इन आयतों की इस खासियत और बरकत पर यकीन रखते हुए इनको अपने दिल और दिमाग़ में महफ़ूज़ करेंगे और इनकी तिलावत

करेंगे अल्लाह तआला उनको भी दज्जाली फ़ितनों से महफ़ूज़ रखेगा।
(अनवारुल बयान 5-454, मआरिफ़ुल हदीस 5-94,95, मुस्लिम शरीफ़ 1-271, मक्तबा रशीदिया ब वास्ता उमतुल्लाह बिन्त आदम)

46 सारी परेशानियां दूर करने का मुजर्रब इलाज

मुन्जियात (एक बार पढ़ें)

अल्लामा इब्ने सिरीन रहिम० के ज़रिए से तजुरबा के साथ मुसीबत व ग़म को दूर करने वाली ये सात आयतें जो मुन्जियात के नाम से मारूफ हैं जो यह हैं....

काअब अहबार रहिम० फ़रमाते हैं कुरआन में सात आयते हैं जब मैं इनको पढ़ लेता हूं तो कुछ परवाह नहीं करता अगरचे आसमान ज़मीन पर गिर पड़े तब भी मैं अल्लाह के हुक्म से नजात पाऊंगा।

① قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ پ١٠ توبه

तर्जुमाः आप कह दीजिए कि हमें सिवाए अल्लाह के हमारे हक़ में लिखे हुए कि कोई

चीज़ पहुंच ही नहीं सकती। यह हमारा कारसाज़ और मौला है मोमिनों को तो अल्लाह ही ज़ात पाक पर ही भरोसा करना चाहिए।

(۲) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (۱۰۷) پ ۱۱ س یونس

तर्जुमा: और अगर तुमको अल्लाह कोई तकलीफ पहुंचाए तो बजुज़ इसके और कोई इसको दूर करने वाला नहीं है और अगर वह तुमको कोई खबर पहुंचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई हटाने वाला नहीं। वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहे निछावर कर दे और वह बड़ी मग़फ़िरत बड़ी रहमत वाला है।

③ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾ پ ١٢ س هود

तर्जुमाः ज़मीन पर चलने फिरने वाले जितने जानदार हैं सबकी रोज़ियां अल्लाह तआला पर है वही इनके रहने सहने की जगह को जानता है और इनके सौंपे जाने की जगह को भी, सब कुछ वाज़ेह किताब में मौजूद है।

④ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ پ ١٢ س هود

तर्जुमाः मेरा भरासा सिर्फ अल्लाह तआला पर ही है जो मेरा और तुम सबका परवरदिगार है जितने भी पांव धरने वाले हैं सबकी पेशानी वही थामे हुए हैं यकीनन मेरा रब बिल्कुल

सही राह पर है।

⑤ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ پ ۲۱ س عنکبوت

तर्जुमाः और बहुत से जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते उन सबको और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रोज़ी देता है वह बड़ा ही सुनने जानने वाला है।

⑥ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْ بَعْدِهٖ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾ پ ۲۲ س فاطر

तर्जुमाः अल्लाह तआला जो रहमत लोगों के लिए खोल दे सो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं और जिसको बन्द कर दे सो उसके बाद उसका कोई जारी करने वाला नहीं और वहीं ग़ालिब हिक्मत वाला है।

(٧) وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ پ ٢٤ زمر

तर्जुमा: अगर आप उनसे पूछें कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है तो यकीनन वे यही जवाब देंगे कि अल्लाह ने, आप उनसे कहिए कि अच्छा यह तो बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुकसान पहुंचाना चाहे तो क्या ये उसके नुकसान को हटा सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझ पर मेहरबानी का इरादा करे तो क्या ये उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं? आप कह दें

कि अल्लाह मुझे काफ़ी है तवक्कुल करने वाले उसी पर तवक्कुल करते हैं।

एक रिवायत में आया है कि जो कोई इन आयतों को हमेशा पढ़ेगा अगर उस पर उहुद पहाड़ के बराबर अजाब का पहाड़ आ पड़ेगा तो भी अल्लाह इनकी बरकत से उसे उठा देगा।

---

*अली मुर्तजा करमल्लाहु वजहु ने फ़रमाया जिसने सुबह व शाम इन आयतों को अपना वज़ीफ़ा किया वह दुनिया की तमाम आफ़तों से अमन में रहा, दुश्मनों के मकर से खुदा की अमान में पहुंचा।

नोटः मुन्जियात शाम के वक़्त भी एक बार पढ़ लें।

اَذْكَارُ الْمَسَاءِ

शाम के अज़कार

अफ़ज़ल यह है कि शाम के अज़कार असर से लेकर इशा तक पूरे कर लिए जाएं।

नोटः गुंजाइश यह है कि शाम के अज़कार असर के बाद से सुबह सादिक़ से पहले पूरे कर लें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

1 अल्लाह की हिफ़ाज़त में आने और शैतान के दूर होने का नबवी नुसखा।

आयतुल कुर्सी (एक बार पढ़ें)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ج لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ط لَهٗ مَا فِي

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○

तर्जुमा: अल्लाह वह ज़ात है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह हमेशा जिन्दा रहने वाला है, तमाम मख़लूक़ात को संभालने वाला है न उसको ऊंध दबा सकती है और न नींद दबा सकती है। उसी के ममलूक हैं सब जो कुछ भी आसमानों में (मौजूदात) हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं ऐसा कौन शख्स है जो उसके पास (किसी की) सिफारिश कर सके बिना उसकी इजाज़त के, वह जानता है उन

(मौजूदात) के तमाम हाज़िर और ग़ायब हालात को और वह मौजूदात उसके मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इल्म के एहाते में नहीं ला सकते मगर जिस क़दर (इल्म देना) वही चाहे। उसकी कुर्सी इतनी बड़ी है कि उसने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है और अल्लाह तआला को इन दोनों (आसमान और ज़मीन) की हिफ़ाज़त कुछ मुश्किल नहीं गुजरती और वही आलीशान और अज़ीमुश्शान है।

(बयानुल कुरआन)

फ़ज़ीलतः जो शख़्स रात के वक़्त आयतल कुर्सी पढ़ ले वह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आ जाता है और शैतान सुबह तक उसके करीब भी नहीं होता। (अनज़रुल बुखारी मय अल्फ़तह ४.७८४)

2 अपनी किफ़ायत का नबवी नुसख़ा (सूरह बक़रा की आखिरी दो आयतें)

آمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَ
رُسُلِهٖ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ قف وَ
قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا قف غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا
مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا
اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ج رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ
عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ
لَنَا بِهٖ ج وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة
وَارْحَمْنَا وقفة اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

(एक बार पढ़ें)

तर्जुमाः मान लिया रसूल ने जो उतरा उस पर उसके रब की तरफ़ से और मुसलमानों ने भी (मान लिया) सब ने माना अल्लाह को और उसके फ़रिश्तों को और उसकी किताबों को और उसके रसूलों को, कहते हैं कि हम जुदा नहीं करते किसी को उसके पैग़म्बरों में से और कह उठे कि हमने सुना और कुबूल किया, तेरी बख़्शिश चाहते हैं, ऐ हमारे रब। और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है अल्लाह मुकल्लफ़ नहीं बनाता किसी को मगर जितनी उसको ताकत है उसी को मिलता है जो उसने कमाया और उसी पर पड़ता है जो उसने किया। ऐ हमारे रब न पकड़ हमको अगर हम भूलें या चूकें ऐ हमारे रब और न रख हम पर बोझ भारी जैसा रखा था हमसे अगले लोगों पर, ऐ रब हमारे और न उठवा हम से वह बोझ कि जिसकी ताकत नहीं और दर गुज़र कर हम

से और बख़्श हमको और रहम कर हम पर, तू ही हमारा रब है मदद कर हमारी काफ़िरों पर। (एक बार पढ़ें)

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ लें तो उसकी किफ़ायत हो जाएगी।

(बुखारी मय अलफ़्तह 9-49 व मुस्लिम 7-455)

3 हर मूज़ी के शर से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा

सूरह इख़लास, सूरह फ़लक़, सूरह नास

सूरह इख़लास तीन बार पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ① اَللّٰهُ الصَّمَدُ ② لَمْ یَلِدْ ۙ وَلَمْ یُوْلَدْ ③ وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ ④

तर्जुमाः आप (इन लोगों से) कह दीजिए कि वह यानि अल्लाह एक है अल्लाह ही बे नियाज़ है उसके कोई औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है और न कोई उसकी बराबर का है

सूरह फ़लक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ① مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ② وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ③ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ④ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ⑤

तर्जुमाः आप कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूं तमाम मखलूक़ की बुराई से और अंधेरी रात की बुराई से जब वह रात आ जाए और गिरहों में पढ़ पढ़ कर फूंकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करने लगे।

सुरह नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ① مَلِكِ النَّاسِ ② اِلٰهِ النَّاسِ ③ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ④ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ⑤ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑥

तर्जुमाः आप कहिए कि मैं आदमियों के मालिक ,आदमियों के बादशाह, आदमियों के माबूद की पनाह लेता हूं वसवसा डालने वाले पीछे हटने वाले (शैतान) की बुराई से जो लोगों

के दिलों में वसवसा डालता है, ख्वाह वह (वसवसा डालने वाला) जिन्नात में से हो या आदमियों में से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स 'सूरह इख्लास, सूरह फलक़, सूरह नास शाम के वक़्त तीन बार पढ़ लें तो हर मूज़ी के शर से हिफ़ाज़त हो जाती है। (सही तिर्मिज़ी 3-172, अबु दाऊद 4-508)

4 नीचे वाली दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए।

दुनिया व आखिरत के कामों पर किफ़ायत का नबवी नुसख़ा (सात बार पढ़ें)

"حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ"

तर्जुमाः अल्लाह तआला ही मुझे काफ़ी है इसके अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है उसी

पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम अर्श का मालिक है।

फ़ज़ीलत: जो शख़्स शाम के वक़्त यह दुआ सात मर्तबा पढ़ ले तो अल्लाह तआला दुनिया आख़िरत की तमाम फ़िकरों के लिए काफ़ी हो जाते हैं मज़कूरा दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए परेशानी दूर होगी। (हयातुस्सहाबा 2-342-343)

5 जहन्नम से आज़ादी पाने का नबवी नुस्ख़ा

(चार बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَمْسَیْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلٰٓئِكَتَكَ وَجَمِیْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैंने इस हालत में शाम की कि मैं आपको गवाह बनाता हूं और मैं गवाह बनाता हूं आपके अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को और आपके तमाम फ़रिश्तों को और आपकी तमाम मख़लूक़ को कि यक़ीनन आप ही अल्लाह हैं। आपके सिवा कोई माबूद नहीं है। आप तन्हा हैं आपका कोई साझी नहीं और यह बात यक़ीनी है कि मुहम्मद सल्ल० आपके बन्दे और रसूल है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स इसको शाम के वक़्त चार मर्तबा पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देते हैं।

(अख़रजा अबुदाऊद 4-317, बुख़ारी फ़ी अदबुलमफ़रद रक़्म 1201)

6 अपने लिए अल्लाह की नेमतों को मुकम्मल करवाने का - नबवी नुसखा

(तीन बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَمْسَیْتُ مِنْكَ فِیْ نِعْمَةٍ وَّعَافِیَةٍ وَّسِتْرٍ فَاَتِمَّ عَلَیَّ نِعْمَتَكَ وَعَافِیَتَكَ وَسِتْرَكَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ"

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! बेशक मैंने आपकी तरफ से नेमत, आफियत और पर्दापोशी की हालत में शाम की लिहाज़ा आप मुझ पर अपने इनाम और अपनी आफियत और पर्दापोशी दुनिया और आखिरत में मुकम्मल फरमाइए।

फज़ीलत: जो शख़्स इसको शाम के वक़्त तीन बार पढ़ ले तो अल्लाह तआला पढ़ने वाले पर अपनी नेमत मुकम्मल फरमा देते हैं।

(अखरजा इब्नुस्सुन्नी फ़ी अमल यवमा वल्लैल रक़म 55)

7 नेमतों की अदाएगी–ए शुक्र का नबवी नुसखा

"اَللّٰهُمَّ مَآ اَمْسٰى بِىْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह जो भी नेमत मुझको या आपकी मखलूक में से किसी को शाम के वक़्त हासिल है वह तन्हा आपकी तरफ से है। इनमें आपका कोई शरीक नहीं लिहाज़ा तमाम तारीफें आप ही के लिए हैं और शुक्र गुजारी आप ही के लिए हैं।

फ़ज़ीलतः जो शख्स शाम के वक़्त इस दुआ को एक बार पढ़ ले तो उसने रात की नेमतों का शुक्र अदा कर लिया।

(अखरजा अबु दाऊद 4-317)

8 कियामत के दिन बन्दा को राज़ी किए जाने का नबवी नुसखा (तीन बार पढ़ें)

"رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا
وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا"

तर्जुमा: मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद सल्ल० के नबी होने पर खुश हूं।

फ़ज़ीलत: जो शख़्स तीन बार यह दुआ शाम के वक़्त पढ़ ले तो अल्लाह तआला (कियामत के दिन) बन्दों को राज़ी कर देंगे।(अबु दाऊद, अहमद 4-732 तिर्मिज़ी 3-141)

9 दुनिया व आखिरत की तमाम भलाइयों का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

"يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ
اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ

اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَۃَ عَیْنٍ"

तर्जुमाः ऐ हमेशा हमेश ज़िन्दा रहने वाले, ऐ मख़्लूकात को काईम रखने वाले मैं आपसे आपकी रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करता हूं। आप मेरे तमाम अहवाल दुरुस्त फ़रमा दीजिए और मुझे एक बार आंख झपकने के बराबर मेरे नफ़स के हवाले न फ़रमाइए।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स यह दुआ एक बार पढ़ ले तो मानो उसने दुनिया व आखिरत की तमाम भलाइयां मांग ली। (अख़रजा अल हाकिम व सहहह व वाफ़िकुज़ज़हबी, अन्ज़र सहीह तर्ग़ीब व तर्हीब 273)

10 नागहानी आफ़तों से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा। (तीन बार पढ़ें)

"بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ"

तर्जुमाः अल्लाह के नाम के साथ मैंने शाम की जिसके नाम की बरकत से कोई चीज नुक्सान नहीं पहुंचाती। ज़मीन में और न आसमान में और वही खूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है।

फ़ज़ीलतः जो शख्स शाम को यह दुआ तीन बार पढ़ ले तो उसकी ना गहानी आफ़तों से हिफ़ाज़त हो जाती है। (अबु दाऊद, तिर्मिज़ी)

11 बदन की आफ़ियत का नबवी नुसखा

(तीन बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ سَمْعِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَصَرِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मेरे बदन को दुरुस्त रखिए, ऐ अल्लाह! मेरे कान आफ़ियत से रखिए, ऐ अल्लाह! मेरी आंख आफ़ियत से रखिए। आपके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है ऐ अल्लाह मैं कुफ़र और मोहताजगी से आपकी पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अज़ाब से मैं आपकी पनाह मांगता हूं आपके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है।

फ़ज़ीलतः शाम के वक्त तीन मर्तबा पढ़ ले। अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि मज़कूरा दुआ जो पढ़ेगा अल्लाह उसे हर लाइन की आफ़ियत में रखेगा। हदीस की दुआ का तर्जुमा बहुत ग़ौर से पढ़िए।

(अबुदाऊद व अन्ज़र सहीह इब्ने माजा 3-142)

12 वसावसे शैतान से हिफ़ाज़त का नबवी नसख़ा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْٓءًا اَوْ اَجُرَّهٗٓ اِلٰى مُسْلِمٍ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाले हर चीज़ के परवरदिगार और हकीकी मालिक मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आपके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं है। मैं आपके ज़रिए मेरे नफ़स की बुराई से और शैतान की बुराई से उसके शिर्क से पनाह मांगता हूं और इससे पनाह मांगता हूं

कि कोई बुराई करूं जिसका वबाल मेरे नफ़्स पर पड़े या किसी मुसलमान को कोई बुराई पहुंचाऊं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त यह दुआ एक बार पढ़ ले तो वसावसे शैतान से उसकी हिफ़ाज़त हो जाती है। (अबु दाऊद, सही तिर्मिज़ी 3-142)

13 जन्नत में दाखिल होने का नबवी नुसखा

(एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْٓءُ لَكَ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ".

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप ही मेरे पालनहार हैं आपके सिवा कोई इबादत के लाइक् नही है आप ही ने मुझे पैदा किया और मैं आपका हक़ीक़ी गुलाम हूं और जहां तक मेरे बस में है मैं आपसे किए हुए अहद और वायदे पर क़ाइम हूं आपकी पनाह चाहता हूं उन तमाम बुरे कामों के वबाल से जो मैंने किए हैं। मैं आपके सामने आपकी उन नेमतों का इकरार करता हूं जो मुझपर हैं और मुझे एतेराफ़ है अपने गुनाहों का, इसलिए मेरे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए, क्योंकि आपके सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़शता।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स यक़ीन के साथ यह दुआ शाम के वक़्त एक बार पढ़ ले फिर उसी रात मैं इन्तिक़ाल कर गया तो वह जन्नती है।

(बुख़ारी 11-97-98)

14 हर क़िस्म की आफ़ियत का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ
فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ
الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ
وَمَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَاٰمِنْ
رَوْعَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَيْنِ يَدَیَّ
وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ يَمِيْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ
فَوْقِیْ وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं आपसे आफ़ियत मांगता हूं दुनिया और आख़िरत में, ऐ अल्लाह मैं आपसे माफ़ी और सलामती मांगता हूं मेरे दीन में और मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में, ऐ अल्लाह ढांप ले मेरे ऐब और खौफ़ की चीज़ों से मुझे बे

फ़िक्र कर दे। ऐ अल्लाह मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और मैं आपकी अज़मत की पनाह लेता हूं इससे कि हलाक किया जाऊं मेरे नीचे से। दुआ का तर्जुमा ख़ूब ग़ौर से पढ़िए।

फ़ज़ीलतः हर किस्म की आफ़ियत का नबवी नुसख़ा है। (अखरजा अबुदाऊद व अन्ज़र सही इब्ने माजा 2-332)

15 ज़वाले ग़म और अदाएगी कर्ज का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह मांगता हूं फिक्र और रंज से और मैं आपकी पनाह मांगता हूं कम हिम्मती और सुस्ती से और मैं आपकी पनाह मांगता हूं बुज़दिली और बख़ीली से और मैं आपकी पनाह मांगता हूं कर्ज़ के बोझ और लोगों के दबाने से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त यह दुआ एक मर्तबा पढ़ ले तो उसका ग़म दूर हो जाएगा और कर्ज़ अदा हो जाएगा।
(अबुदाऊद)

नोटः लफ़्ज़ अल हज़न और अल हुज़्न दोनों ही ठीक हैं।

16 जहन्नम से हिफ़ाज़त का नबवी नुसखा

(सात बार पढ़ें)

"اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप मुझे जहन्नम की आग से

बचा लीजिए

फ़ज़ीलतः जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद किसी से बात करने से पहले सात बार यह दुआ पढ़ ले तो जहन्नम से महफ़ूज़ हो जाता है। (अबु दाऊद)

17 अल्लाह तआला से उसकी शान के मुताबिक़ अज्र लेने का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़ें)

يَارَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِىْ لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِكَ"

तर्जुमाः ऐ मेरे परवरदिगार! हक़ीक़ी तारीफ़ आप ही के लिए है जैसी कि आपकी ज़ात की बुज़ुर्गी और आपकी अज़ीम सलतनत के लाइक़ हो।

फ़ज़ीलतः जब ख़ुदा का बन्दा यह जुमला पढ़ता है

कि अल्लाह तआला उसकी शान के मुताबिक़ अज्र देगा।

(रवाह अहमद व इब्ने माजा व रजाला सक़ात)

18 हर मूज़ी जानवर से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा (तीन बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ"

तर्जुमाः मैं अल्लाह के कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं तमाम मख़लूक़ात की बुराई से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो हर मूज़ी जानवर से हिफ़ाज़त हो जाती है और अगर जानवर उस भी ले तो उससे नुक़सान नहीं पहुंचता।

(अबु दाऊद, तिर्मिज़ी, सहीह, इब्ने माजा 4-434)

19 मुसीबत से बचाव का नबवी नुसखा

(एक बार पढे)

"اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا، اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप ही मेरे पालने वाले हैं। आपके सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं है। आप ही पर मैंने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो अल्लाह

ने नहीं चाहा यह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों के करने की ताक़त अल्लाह की मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला अज़मत वाला है। मैं यक़ीन करता हूं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह कि अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को मुहीत है। ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह मांगता हूं मेरे नफ़्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिसकी पेशानी आपके क़ब्ज़े में है बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को यह दुआ एक बार पढ़ ले तो सुबह तक कोई मुसीबत उसको नहीं पहुंचेगी।

(रवाह इब्नुस्सुन्नी अबु दाऊद अन बाअज़ बिनातुन्नबी सल्ल०)

नीचे वाली दुआ मग़रिब की अज़ान के वक़्त

पढ़ लीजिए।

20 अल्लाह से बख़्शिश तलब करने का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِيْ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह यह आपकी रात के आने और दिन के जाने और आपकी तरफ़ बुलाने वालों की आवाज़ों का वक़्त है इसलिए मुझे बख़श दीजिए। (रवाह अबु दाऊद)

21 यह दुआ एक बार खुद भी पढ़ें और घर वालों से भी पढ़वाएं।

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ مَا خَلَقَ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا فِيْ

الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ

مَافِى الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ

عَدَدَ مَآ اَحْصٰى كِتَابُهٗ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ

مِلْأَ مَآ اَحْصٰى كِتَابُهٗ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ

عَدَدَ كُلِّ شَىْءٍ ـ سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ

كُلِّ شَىْءٍ ـ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا

خَلَقَ ـ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا خَلَقَ ـ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا فِى الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ ـ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا فِى الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ ـ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَآ اَحْصٰى كِتَابُهٗ وَالْحَمْدُ

لِلّٰهِ مِلْأَ مَآ اَحْصٰى كِتَابُهٗ ـ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ

كُلِّ شَىْءٍ ـ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ كُلِّ شَىْءٍ

तर्जुमा: मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी

शान के लाइक़, उसकी तमाम मख़लूक़ की गिनती के बराबर, मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लाइक़ तमाम मख़लूक़ात को भरने के बराबर, मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब, उन तमाम चीज़ों के बराबर जो ज़मीन व आसमान में है। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब उन तमाम चीज़ों को भरकर जो ज़मीन व आसमान में हैं।

मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हू उनकी गिनती के बराबर जिनको अल्लाह की किताब ने घेरा है। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लाइक़ हर चीज़ की गिनती के बराबर। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उस की शान के मुनासिब हर चीज़ को भर कर। हक़ीक़ी तारीफ़

अल्लाह के लिए ख़ास है उसकी मख़लूकात को भरकर और हकीकी तारीफ़ अल्लाह के लिए खास है उन तमाम चीज़ों को भर कर जो ज़मीन व आसमान में हैं और हकीकी तारीफ़ अल्लहा के लिए ख़ास हैं उनकी गिनती के बराबर जिनको अल्लाह की किताब ने घेरा है और हकीकी तारीफ़ अल्लाह के लिए ख़ास है उन चीज़ों को भर कर जिनको अल्लाह की किताब ने घेरा हे और हकीकी तारीफ़ अल्लाह के लिए खास है हर चीज़ की गिनती के बराबर और हकीकी तारीफ़ अल्लाह के लिए मुखतस है हर चीज़ को भर कर।

फ़ज़ीलतः इन कलिमात को सीख लो और अपनी औलाद को भी सिखाओ ख़ुद भी पढ़ो और बीवी बच्चों को भी पढ़वाओ।

हज़रत अबु उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि

मुझे हुजूर अक्दस सल्ल० ने देखा कि मैं अपने होंटों को हिला रहा हूं। आप सल्ल० ने पूछा ऐ अबु उमामा तुम होंट हिलाकर क्या पढ़ रहे हो? मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० मैं अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हूं हुजूर सल्ल० ने फरमाया क्या मैं तुम्हें ऐसा ज़िक्र न बताऊं जो तुम्हारे दिन रात ज़िक्र करने से ज़्यादा भी है और अफ़ज़ल भी है। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़रूर बताएं। फरमाया- तुम यह मज़कूरा कलिमात कहा करो।

तबरानी की रिवायत में है कि हुजूर अक्दस सल्ल० ने इर्शाद फरमाया इन कलिमात को सीख लो और अपने बाद अपनी औलाद को सिखाओ।

(बिखरे मोती जुज़ 2-78-79)

22 ज़िक्र के मामूलात की कमी की तलाफ़ी का नबवी नुसख़ा (एक बार पढ़ें)

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ (سورة الروم)

तर्जुमाः तुम अल्लाह की पाकी बयान करो। उसकी शान के लाइक़ सुबह और शाम के वक़्त और दिन के आखिरी हिस्से में और दोपहर के वक़्त और हकीकी तारीफ अल्लाह ही के लाइक़ है। आसमानों और ज़मीन में, वह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को जिन्दा से निकालता है और वह ज़मीन

को उसके खुश्क हो जाने के बाद जिन्दा करता है और (ऐ लोगो आखिरत में) इसी तरह तुमको (क़ब्रों से) निकाला जाएगा।

फ़ज़ीलतः एक मर्तबा पढ़ने से ज़िक्र के मामूल में कमी की तलाफ़ी हो जाती है। (अबुदाऊद) मुसनद की हदीस में है कि हुजर सल्ल० ने फ़रमाया मैं तुम्हें बताऊं कि खुदा तआला ने हज़रत इबराहीम अलैहि० का नाम ख़लील वफ़दार क्यों रखा? इसलिए कि वह सुबह व शाम इन कलिमात को तुज़हिरून तक पढ़ा करते थे। (इब्ने कसीर 4-166)

23 फ़रिश्तों की दुआ के मुसतहिक़ बनने और वफ़ात पर शहादत का अज्र मिलने का नबवी नुसखा (तीन बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ"

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जो खूब सुनने वाला है बड़ा जानने वाला है मर्दूद शैतान से।

"هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی ۚ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾" (سورة الحشر)

तर्जुमाः यह ऐसा है कि उसके सिवा कोई और माबूद (बनने के लाइक़) नहीं, वह जानने वाला है

पोशीदा चीज़ों का और ज़ाहिरी चीज़ों का वही बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है वह ऐसा अल्लाह है कि उसके सिवा और माबूद (बनने के लाइक) नहीं। वह बादशाह है सब ऐबों से पाक है सालिम है अम्न देने वाला है (अपने बन्दों को ख़ौफ़ की चीज़ों से) निगहबानी करने वाला है ज़बरदस्त है खराबी का दुरुस्त कर देने वाला है बड़ी अज़मत वाला है। अल्लाह तआला लोगों के शिर्क से पाक है। वह माबूद (बरहक़) है पैदा करने वाला है ठीक ठीक बनाने वाला है सब चीज़ें उसी की पाकी बयान करती है जो आसमानों और जमीनों में है और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (सूरह हश्र) (एक बार पढ़ें)

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को [illegible]

तीन बार पढ़कर फिर एक बार मज़कूरा

आयतें पढ़ ले तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ-ए-रहमत करते हैं और उस रात मरने पर शहादत का अज्र मिलता है। (तिर्मिज़ी)

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

24 सारी मुरादें पूरी किए जाने का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

"اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنْتَ تَهْدِيْنِىْ وَاَنْتَ تُطْعِمُنِىْ وَاَنْتَ تَسْقِيْنِىْ وَاَنْتَ تُمِيْتُنِىْ وَاَنْتَ تُحْيِيْنِىْ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं और आप ही मुझे खिलाते हैं और आप ही मुझे पिलाते हैं और आप ही मुझे मारेंगे और आप ही मुझे ज़िन्दा करेंगे।

फ़ज़ीलतः हसन बसरी रहिम० फ़रमाते हैं कि हज़रत

सुमरह बिन जुन्दुब रज़ि० ने फरमाया कि मैं तुम्हें ऐक ऐसी हदीस न सुनाऊं जो मैं ने नबी करीम सल्ल० से कई मर्तबा सुनीहै और हज़रत अबु बकर और हज़रत उमर रज़ि० से भी कई मर्तबा सुनी है मैंने अर्ज़ किया ज़रूर सुनाएं। हज़रत सुमरह रज़ि० ने फ़रमाया जो शख़्स सुबह और शाम इन कलिमात को पढ़े तो अल्लाह तआला से जो मांगेगा अल्लाह तआला ज़रूर उसको अता करेंगे।

(हवाला बिखरे मोती 1-144-145 में देखें)

25 जिन्नात की शरारत से बचने का नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ

وَّلَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ
وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّ مَا ذَرَأَ
فِي الْاَرْضِ وَشَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ
طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا
يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ"

तर्जुमा: मैं अल्लाह की करीम ज़ात की और अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं जिन कलिमात से आगे नहीं बढ़ता कोई नेक और न कोई बुरा शख्स उन तमाम चीजों की बुराई से जो आसमान से उतरती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान में चढ़ती हैं और उन तमाम चीजों की बुराई से जो ज़मीन से निकलती हैं और

रात और दिन के फ़ितनों से और रात और दिन में खटखटाने वालों से मगर, वह खटखटाने वाला जो खैर के साथ खटखटाता हो ऐ बेहद मेहरबान!

फ़ज़ीलतः इस दुआ के पढ़ने की वजह से रसूलुल्लाह सल्ल० को तकलीफ पहुंचाने की नीयत से आने वाला जिन्न मुंह के बल गिर पड़ा।

(मोता इमाम मालिक रहिम०)

26 आसेब व सेहर वग़ैरा से हिफ़ाज़त का नबवी नुसखा (तीन बार पढ़ें)

"اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ"

तर्जुमाः अल्लाह के लिए हमने शाम की और पूरी सलतनत ने शाम की। तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है। पनाह लेता हूं अल्लाह की जिसने आसमान को रोके रखा कि वह ज़मीन पर गिरे मगर उसकी इजाज़त से मखलूक़ की बुराई से और जो फैली है और शैतान के शर और उसके शिर्क से।

फ़ज़ीलतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुमने इस (मज़कूरा) दुआ को तीन बार शाम को पढ़ लिया तो सुबह तक शैतान, काहिन और जादूगर के ज़रर से महफूज़ रहोगे।

(अद दुआ 952 इब्नुस्सुन्नी 66 मजमअ 1-119)

27 जादू से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़ें)

"اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ شَىْءٌ اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِىْ لَايُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ وَّبِاَسْمَآءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ"

तर्जुमाः मैं अल्लाह की अज़ीम ज़ात की पनाह मांगता हूं कि जिससे कोई चीज़ बड़ी नहीं (और पनाह मांगता हूं) अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की जिन से आगे नही बढ़ता है कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स (और मैं पनाह मांगता हूं) अल्लाह के

तमाम अच्छे नामों की जो मुझे मालूम हैं और जो मुझे मालूम नहीं हैं उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उसने पैदा की और ठीक बनाई और फैलाई।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त एक मर्तबा यह दुआ पढ़ ले इन्शाअल्लाह जादू से हिफ़ाज़त हो जाएगी।

हज़रत काअब अहबार रहिम० फ़रमाते हैं कि अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूद मुझे जादू के ज़ोर से गधा बना देते।

(मोता इमाम मालिक रहिम०)

28 हर बला से हिफ़ाज़त का नबवी नुसख़ा

(एक बार पढ़ें)

आयतल कुर्सी पढ़कर फिर सूरह मोमिन की नीचे वाली तीन आयतें शाम के वक़्त पढ़ ले।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ط لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ط مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ط یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ط وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ج وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ج وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ج وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ○

तर्जुमा: अल्लाह वह ज़ात है कि उसके सिवा कोई

माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है तमाम मखलूक को संभालने वाला है न उसको ऊंघ दबा सकती है और न नींद (दबा सकती है) उसी के ममलूक हैं। सब जो कुछ भी आसमानों में (मौजूदात) हैं और जो कुछ जमीन में हैं ऐसा कौन शख्स है तो उसके पास (किसी की) सिफारिश कर सके सिवाए उसकी इजाज़त के। वह जानता है उन (मौजूदात) के तमाम हाज़िर और ग़ायब हालात को और वह मौजूदात उसके मालूमात से किसी चीज़ को अपने इल्म के एहाते में नहीं ला सकते मगर जिस क़दर (इल्म देना) वही चाहे, उसकी कुर्सी (इतनी बड़ी) है कि उसने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है और अल्लाह तआला को उन दोनों (आसमान और ज़मीन की हिफ़ाज़त कुछ मुश्किल नहीं गुजरती और वही आलीशान और अज़ीमुश्शान है।

(बयानुल कुरआन)

सूरह मोमिन की शुरू की तीन आयतें

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِى الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾

तर्जुमाः यह किताब उतारी गयी है अल्लाह की तरफ से जो ज़बरदस्त है हर चीज़ का जानने वाला है गुनाह बख्शने वाला है और तौबा कुबूल करने वाला है सख़्त सज़ा देने वाला है कुदरत वाला है उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। उसी के पास सबको जाना है।

फ़ज़ीलतः जो शख्स "आयतुल कुर्सी" पढ़कर फिर सूरह मोमिन की मज़कूरा तीन आयतें शाम के वक़्त पढ़ ले वह उस रात हर बुराई और

तकलीफ से महफ़ूज़ रहेगा।
(इब्नुस्सुन्नी 21, अनवारुल बयान 1-113)

29 जिन्नात की शरारत से बचने का एक और नबवी नुसखा (एक बार पढ़ें)

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ (سورۂ مؤمنون)

तर्जुमाः क्या तुम यह गुमान किए हुए हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौटाए ही न जा ओगे। अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है वह बड़ी बुलन्दी वाला है उसके सिवा कोई माबूद नही । वही बुजूर्ग अर्श का मालिक है जो शख़्स अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को पुकारे जिसकी कोई दलील उसके पास नहीं, पस उसका हिसाब तो उसके रब के ऊपर ही है। बेशक काफ़िर लोग नजात से महरूम हैं और कहो कि ऐ मेरे रब तू बख़्श और रहम कर और तू सब मेहरबानों से बेहतर मेहरबानी करने वाला है।

फ़ज़ीलतः इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के पास आया तो आपने मज़कूरा आयत पढ़कर उसके कान में दम की और वह अच्छा हो

गया। जब नबी करीम सल्ल० से इसका ज़िक्र किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया अब्दुल्लाह! तुमने उसके कान में क्या पढ़ा था? आप (रज़ि०) ने बतला दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम ने ये आयतें उसके कान में पढ़कर उसे जला दिया अल्लाह की क़सम। इन आयतों को अगर ईमान वाला शख़्स यक़ीन के साथ किसी पहाड़ पर पढ़ें तो वह भी अपनी जगह से टल जाए।

अबु नईम ने रिवायत नक़्ल की है उन्हें रसूल करीम सल्ल० ने एक लश्कर में भेजा और फ़रमाया कि हम सुबह व शाम मज़्कूरा आयतें तिलावत फ़रमाते रहें। तो हमने बराबर उनकी तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी। अल हम्दु लिल्लाह हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लौटे।

तफ़सीर इब्ने कसीर 3-474,
बिखरे मोती 1-15)

30 जब किसी खबर का इन्तिज़ार हो

(एक बार पढ़ें)

" اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فُجَآءَةِ الْخَيْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فُجَآءَةِ الشَّرِّ "

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं आपसे अचानक की भलाई का सवाल करता हूं और अचानक की बुराई से आपकी पनाह मांगता हूं।

फ़ज़ीलतः हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० शाम होते वक़्त यह दुआ किया करते थे लिहाज़ा जब किसी मामले में कोई ख़बर मिलने वाली हो या नया वाक़िआ पेश आने वाला हो तो यही दुआ पढ़ें। (किताबुल अज़कार 104)

31

(٣١) "اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ اللَّيْلِ فَتْحَهَا وَنَصْرَهَا وَنُوْرَهَا وَبَرَكَتَهَا وَهُدَاهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا فِيْهَا وَشَرِّمَا بَعْدَهَا"

तर्जुमाः हमारी शाम हो गयी और अल्लाह रब्बुल आलमीन के मुल्क की शाम हो गयी। ऐ अल्लाह मैं आपसे इस रात की भलाई और इस की फ़तह और कामयाबी और नूर और उसकी बरकत और उस की हिदायत मांगता हूं और उस रात और उसके बाद के शर से आपकी पनाह मांगता हूं। (एक बार पढ़ें)

(हिसने हसीन) (पुर नूर दुआ 32)

(٣٢) "اَمْسَيْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَآ اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ"

तर्जुमाः हमने शाम की फितरत इस्लाम पर और अपने महबूब नबी सल्ल० के दीन पर और अपने जद्दे अमजद हज़रत इबराहीम अलैहि० की मिल्लत पर जो तौहीद परस्त मुसलमान थे और मुशिरकों में से न थे।

(एक बार पढ़ें) (हिसने हसीन-७०)

33 मन्ज़िल के ख्वास

मन्ज़िल आसेब सेहरा और कुछ दूसरे खतरों से हिफाज़त के लिए एक मुजर्रब अमल है।

अल कवलुल जमील में हजरत शाह वलीउल्लाह कुदस सिर्रहु तहरीर फ़रमाते हैं ये तेंतीस (33) आयतें है जो जादू के असर को रफ़अ करती हैं और शयातीन, चोरों और दरिन्दे जानवरों से पनाह हो जाती है। और बहिश्ती जेवर में हज़रत थानवी रहिम० फ़रमाते हैं अगर किसी पर आसेब का शक हो तो नीचे की आयत लिखकर मरीज़ के गले में डाल दें और पानी पर दम करके मरीज़ पर छिड़क दें और अगर घर में असर हो तो पानी पर इन आयतों (मन्ज़िल) को पढ़कर घर के चारों कोनों में छिड़क दें।

एक बार मन्ज़िल पढ़ लीजिए।

मन्ज़िल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝

1 हदीस पाक में हुज़र सल्ल० का इर्शाद है कि सूरह फ़ातिहा हर बीमारी से शिफ़ा है (दारमी, बैहेकी) इसको पढ़कर बीमारों पर दम करने की हदीस में तर्ग़ीब है।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ ج وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ق وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

1 हदीस पाक में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फरमाया कि सूरह बक़रा की दस आयतें ऐसी हैं कि अगर कोई शख़्स उनको रात को पढ़ ले तो उस रात को जिन्न शैतान घर में दाखिल न होगा और उसको और उसके घर वालों की उस रात में कोई आफ़त, बीमारी, रंज व ग़म वग़ैरह नागवार चीज़ पेश न आएगी और अगर ये आयतें किसी मजनूं पर पढ़ी जाएं तो उसको इफ़ाक़ा हो जाएगा। वे दस आयते ये हैं चार आयते शुरू सूरह बक़रा की फिर तीन आयतें दरमयानी यानि आयतल कुर्सी और उसके बाद की दो आयतें फिर आखिर सूरह बक़रा की तीन आयतें।

(मआरिफुल कुरआन)

2 इस आयत का मफ़हूम तौहीद के मायने के बराबर है इसमें तौहीद है जिस पर सारे दीन का मदार है।

إِلَّا هُوَ ۚ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ○ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ○ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

أَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ
إِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ؕ وَإِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ أَنْفُسِكُمْ
أَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ
مِّنْ رُّسُلِهٖ قف وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ق
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ

1 हदीस पाक में रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है कि अल्लाह तआला ने सूरह बकरा को इन दो आयतों पर ख़त्म किया है जो मुझे उस ख़ज़ान-ए-खास से अता फरमायी भी है जो अर्श के नीचे हैं इसलिए तुम खास तौर पर इन आयतों को सीखो और अपनी औरतों को और बच्चों को सिखाओ। (मुसदरक, हाकिम)

اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا

مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَآ

اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا

كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ

رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ

وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة اَنْتَ

مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

1 हज़रत अबु अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जो शख्स हर नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी और आयत اللّٰهُمَّ مٰلِكَ سے بِغَيْرِ حِسَابٍ तक पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसके सब गुनाह फरमाएग और जन्नत में जगह देंगे और उस की सत्तर हाजतें पूरी फरमाएंगे जिन में कम से कम हाजत उसकी मगफिरत है। (रूहुल मआनी)

هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ
الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ
الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى
النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ
الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَىِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ

1 कुरआन पाक की ये तीनों आयतें اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ سے
مُحْسِنِيْنَ तक दफअ मुज़िर्रात के लिए मुजर्रब है।

حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ
مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ
تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ
تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝
وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا
وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ● قُلِ ادْعُوا
اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا
فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ
بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

1 हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फरमाया जो शख़्स सुबह होते और शाम होते ये आयतें कुलिद उल्लाह आख़िर सूरत तक पढ़ ले तो उसका दिल मुर्दा न होगा उस दिन और उस रात में। (अद देलमी)

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهُ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ○ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ○ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ○ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ○ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○

1 हज़रत मुहम्मद बिन इबराहीम तमीमी अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हमको रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक सरया में भेजा, जाते हुए यह वसीयत की कि हम सुबह और शाम होते ही ये आयतें पढ़ लिया करें तो हम पढ़ते रहे। हमें माले ग़नीमत भी मिला और हमारी जानें भी महफ़ूज़ रहीं।

(इब्नुस्सुन्नी)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ[1] صَفًّا ○ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ○
فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ○ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ○
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَ
رَبُّ الْمَشَارِقِ ○ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا
بِزِيْنَةِ نِ الْكَوَاكِبِ ○ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ
شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ○ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى
وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ○ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ
عَذَابٌ وَّاصِبٌ ○ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ
فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ
خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ط اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ●

1 इन चार आयतों में फ़रिश्तों की क़सम खाकर यह बयान किया गया है कि तुम सबका माबूद बरहक़ एक है। आगे की छः आयतों में तौहीद की दलील मुसतक़्लन बयान की गयी है।

(माख़ूज़ अज़ मआरिफ़ुल क़ुरआन)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ
اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ○
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يُرْسَلُ
عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا
تَنْتَصِرَانِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○
فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ○
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ● لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا
الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا
مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا

1 कुरआन पाक की ये आयत दफ़अ मुज़िर्रात के लिए बहुत मुजर्रब व मशहूर हैं।

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ
اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ج هُوَ
الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ج اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ
الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ط
سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ج وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

1 हज़रत माकिल इब्ने यसार रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया जो सुबह के वक़्त तीन बार और इसके बाद सूरह हज की आखिरी तीन आयतें हुवल्लाहुल्लज़ी से आखिर सूरह तक पढ़ ले तो अल्लाह सत्तर हज़ार फरिश्ते मुकर्रर फरमा देते हैं जो शाम तक उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं और अगर उस दिन मर गया तो शहादत की मौत हासिल होगी और जिसने शाम को यही कलिमात पढ़ लिए तो यही दर्जा उसको हासिल होगा।

(तफसीर मज़हरी बहवाला तिर्मिज़ी)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اُوْحِىَ اِلَىَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا
اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ○ يَّهْدِىْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا
بِهٖ ○ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ○ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى
جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ○ وَّاَنَّهٗ
كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ○ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ○

दफअ

1 कुरआन पाक की ये आयतें [illegible] मुज़िर्रात के लिए बहुत मुजर्रब और मशहूर हैं।

2 हज़रत जबीर बिन हैशम रज़ि० फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनसे फरमाया कि क्या तुम यह चाहते हो कि जब सफ़र में जाओ तो वहां अपने सब साथियों से ज़्यादा खुशहाल बा मुराद हो और तुम्हारा सामान ज़्यादा हो जाए। उन्होंने कहा या रसूलुल्लह बेशक मैं ऐसा चाहता हूं। आपने फरमाया आख़िर कुरआन की पांच सूरतें सूरह काफिरून, सूरह नसर, सूरह इख़लास, सूरह फलक और सूरह नास पढ़ा करो और हर सूरह को बिस्मिल्लाह से शुरू करो और बिस्मिल्लाह ही पर ख़त्म करो। (तफसीर मज़हरी)
एक रियात में सूरह काफिरून को चौथाई कुरआन के बराबर फरमाया। (तिर्मिज़ी)

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۗ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ

---

1 एक रिवायत में सूरह इख़्लास को तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया।

2 एक तवील हदीस में रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स सुबह और शाम कुल हुवल्लाहु अहद और सूरह फ़लक़ व सूरह नास पढ़ लिया करे तो उसके लिए काफ़ी है और एक रिवायत में है कि यह उसको हर बला से बचाने के लिए काफ़ी है।

وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الۡعُقَدِ ۙ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ؏

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ الۡخَنَّاسِ ۙ الَّذِىۡ يُوَسۡوِسُ فِىۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الۡجِنَّةِ وَالنَّاسِ ؏

---

1 इमाम अहमद ने हज़रत उकबा इब्न आमिर रजि० से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया कि मैं तुमको ऐसी तीन सूरतें बताता हूं जो तौरात, इंजील, जुबूर और कुरआन सब में नाज़िल हुई हैं और फरमाया कि रात को उस समय तक न सोओ जब तक इन तीनों (सूरह इख़लास, फलक और नास) को न पढ़लो। हज़रत उकबा रज़ि० कहते हैं कि उस समय से मैंने कभी इनको नहीं छोड़ा। (इब्ने कसीर)

34 सौ मर्तबा तीसरा कलिमा पढ़ लीजिए

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

35 सौ मर्तबा इस्तग़्फ़ार पढ़ लीजिए

"اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ"

36 सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए

*बेहतर हैं कि दुरूदे इबराहीमी पढ़िए लेकिन मुख़्तसर दुरूद पढ़ना हो तो यह है---

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ"

रात के मामूलात में

37 सूरह अलिफ़ लाम मीम तन्ज़ील अस्सज्दा पढ़ लीजिए (एक बार)

38 सूरह मुल्क पढ़ लीजिए

(एक बार)

फ़ज़ाइल-हदीस में ब रिवायत अबु हुरैरह रज़ि० हुजूर सल्ल० से मन्कूल है कि.....

1 कुरआन शरीफ़ में एक सौ तीस आयतें ऐसी हैं कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करती रहती हैं यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत करा दे। वह सूरह तबारकल्लज़ी है।

2 फ़रमाने नबवी है कि यह सूरह हर मोमिन के दिल में हो।

3 हदीस में है कि जिसने सूरह मुल्क व सज्दा को मग़रिब व इशा के बीच पढ़ा गोया उसने लैलतुल क़दर में क़्याम किया।

4 रिवायत में है कि ये दोनों सूरतों के पढ़ने

वाले के लिए सत्तर नेकियां लिखी जाती हैं और सत्तर बुराइयां दूर की जाती हैं।

5 रिवायत में है कि इन दोनों सूरतों को पढ़ने वाले के लिए लैलतुल क़दर की इबादत के बराबर सवाब लिखा जाता है।

(हाज़ा फ़िल मज़ाहिर फ़जाइले क़ुरआन 52)

6 जो यह सूरह रोज़ाना पढ़ने का आदी हो वह अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहता है।

(हाकिम)

7 हुज़ूर सल्ल० का सोने से पहले इन दोनों सूरतों के पढ़ने का मामूल था।

(तिर्मिज़ी, हिसने हसीन-62)

39 सूरह वाक़िआ पढ़ लीजिए फ़ाक़ा नहीं आएगा (एक बार)

फ़ज़ीलतः बरिवायत इब्ने मसऊद हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद मन्क़ूल है कि......

1 जो शख़्स हर रात को सूरह वाक़िआ पढ़े उसे भी फ़ाक़ा नहीं होगा और इब्ने मसऊद

रज़ि० अपनी बेटियों को हुक्म फ़रमाया करते थे कि हर शब में इस सूरह को पढ़ें।

2 सूरह हदीद, सूरह वाक़िआ और सूरह रहमान पढ़ने वाला जन्नतुल फ़िरदौस के रहने वालों में से पुकारा जाता है।

3 रिवायत में है कि सूरह वाक़िआ सूरह ग़नी है इसको पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ।

4 रिवायत में है कि अपनी बीवियों को सिखाओ।

5 हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी इसके पढ़ने की ताकीद मन्क़ूल है।

(फ़ज़ाइले क़ुरआन)

40 एक बार मुन्जियात शाम के वक़्त पढ़ लीजिए।

नोटः- मुन्जियात "अज़्कारुस्सबाह" सफ़ह 54-57 पर मौजूद है।

मन्दरजा ज़ैल (नीचे लिखी हुई) दुआएं किसी भी वक़्त पढ़ लें।

मुस्तजाबुद दुआ होने का नबवी नुसख़ा

(25 या 27 मर्तबाः पढ़ लें)

"اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मेरी और तमाम मोमिन मर्दो औरतों की और तमाम मुसलमान मर्दो और औरतों की मग़फ़िरत फ़रमा।

फ़ज़ीलतः हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स दिन में 25 या 27 मर्तबा तमाम मोमिन मर्दो और मोमिन औरतों के लिए मग़फिरत की दुआ मांगेगा वह अल्लाह तआला के नज़दीक उन मुसतजाबुददावात (जिनकी दुआएं अल्लाह के यहां मक़बूल होती है) लोगों में शामिल हो जाएगा जिनकी दुआओं से ज़मीन वालों को रिज़्क़ दिया जाता है।

(हिसने हसीन-79)

आसमान के दरवाज़े खुलवाने का नबवी नुसखा

(एक बार पढ़ लें)

नोटः- खुशख़बरी की बात यह है कि आं हज़रत सल्ल० की ज़बाने मुबारक से सबसे पहले निकलने वाला कलाम यह है

(ब वास्ता मोहतरमा उम्मुल्लाह बिन्ते आदम)

"اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا"

तर्जुमाः अल्लाह बड़ा है सबसे बड़ा और तारीफ़ अल्लाह की है बहुत ज़्यादा और हम सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करते हैं।

फ़ज़ीलतः इमाम मुस्लिम ने अब्दुल्लाह इब्ने उमर से बयान किया है कि एक बार हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने मज़कूरा कलिमात कहे तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया फ़लां फ़लां

कलिमात कहने वाला कौन है? हाज़िरीन में से एक आदमी ने कहा- या रसूलुल्लाह मैं हूं। आपने फ़रमाया- मुझे इन कलिमात से ताज्जुब हुआ कि इनके लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए।

(हिसनुल मुस्लिम-60)

शैतान के शर से बचने का नबवी नुसख़ा

(दस मर्तबा पढ़ लें)

"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं मर्दूद शैतान से।

फ़ज़ीलत- हदीस शरीफ़ में आया है जो शख़्स अल्लाह तआला से दिन में दस बार शैतान से पनाह मांगेगा अल्लाह तआला उसको शैतान से बचाने के लिए एक फ़रिश्ता मुकर्रर फ़रमा देंगे।

(हिसने हसीन-79)

माल व मनाल में इज़ाफ़ा का एक नुसख़ा

(एक मर्तबा पढ़ लें)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह रहमतें नाज़िल फरमा, अपने बन्दे और अपने रसूल पर और तमाम ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों पर।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स अपने माल व मनाल में इज़ाफ़ा और ज़्यादती चाहे तो यह दुआ पढ़े। (हिसने हसीन-220)

हम्द व दुरूद बेहतरीन अन्दाज़ में

(एक मर्तबा पढ़ लें)

"اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ فَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ وَافْعَلْ بِنَا مَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ فَاِنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह तेरे लिए ही हम्द है जो तेरी शान के मुनासिब है पस तू सैयदना मुहम्मद सल्ल० पर रहमत व सलामती भेज जो तेरी शायाने शान हो। बेशक तू ही इसका मुसतहिक़ है कि तुझ से डरा जाए और तू ही मग़फिरत करने वाला है।

फ़ज़ीलतः- अल्लामां इब्नुल मुशतहिर रहिम० फरमाते

हैं कि जो शख़्स यह चाहता हो कि अल्लाह जल्ले शानहु की ऐसी हम्द करे जो सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल हो जो उसकी मशख़्लूक़ में से किसी ने न की हो। अव्वलीन व आखिरीन और मलाइका मुकर्रिबीन आसमान वालों और ज़मीन वालो में से भी अफ़ज़ल हो और इसी तरह यह चाहे कि हुजूर सल्ल० पर ऐसा दुरूद पढ़े जो इन सबसे अफ़जल हो जितने दुरूद किसी ने पढ़ें हैं और इसी तरह यह भी चाहता हो कि वह अल्लाह जल्ले शानुहं से कोई ऐसी दुआ मांगे जो उन सबसे अफ़जल हो जो किसी ने मांगी हों तो वह यह दुआ पढ़ा करे।

(फ़ज़ाइल दुरूद शरीफ़) बवास्ता उम्मुल्लाह बिन्त आदम

मन्दर्जा ज़ेल दुआ तीन मर्तबा पढ़ लीजिए आपके सारे गुनाह माफ।

"اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِىْ مِنْ عَمَلِىْ"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह तेरी मग़फिरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वुसअत वाली है और मुझे अपने अमल से ज़्यादा तेरी रहमत की उम्मीद है।

फ़ज़ीलतः– एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर दो या तीन बार-कहा हाय मेरे गुनाह! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया यह कहो اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ ... عِنْدِىْ مِنْ عَمَلِىْ

"ऐ अल्लाह! तेरा मग़फिरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वुसअत वाली है और मुझे अपने अमल से ज़्यादा तेरी रहमत की उम्मीद है। उसने यह कहा हुज़ूर सल्ल० ने कहा दोबारा कहो। उसने दोबारा कहा। हुज़ूर सल्ल० ने

कहा। फिर कहो। उसने फिर कहा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा- उठ, जा अल्लाह ने तेरी मगफिरत कर दी है।

(हयातुस्सहाबा 2-350)

बीमारी और तंग दस्ती दूर करने का नबवी नुसख़ा

"تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا-"

तर्जुमाः मैं उस ज़िन्दा हस्ती पर भरोसा करता हूं जिसपर कभी मौत तारी नहीं होगी। तमाम खूबियां उसी अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न उसका कोई

सलतनत में शरीक है और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है और उसकी खूब बड़ाइयां बयान कीजिए।

फज़ीलत- हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० फरमाते हैं कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ बाहर निकला इस तरह कि मेरा हाथ आपके हाथ में था। आप सल्ल० का गुज़र एक ऐसे शख़्स पर हुआ जो बहुत शिकस्ता हाल और परेशान था। आप सल्ल० ने पूछा-तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया। उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि बीमारी और तंगदस्ती ने मेरा यह हाल कर दिया। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें चन्द कालिमात बताता हूं वे पढ़ोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंग दस्ती जाती रहेगी (वे कलिमात मज़कूरा कलिमात हैं) चुनांचे कुछ अर्से के बाद फिर आप सल्ल० उस तरफ़ तशरीफ़ ले गए तो उसको अच्छे हाल में पाया। आप सल्ल० ने

खुशी का इज़हार फ़रमाया। उसने अर्ज़ किया कि जब से आप सल्ल० ने मुझे ये कलिमात बताए थे मैं पाबन्दी से इन कलिमात को पढ़ता हूं। (मआरिफ़ुल कुरआन 5-531) बिखरे मोती 1-89-90

सारा दिन गुनाहों से बचने का नबवी नुसखा

(दस बार पढ़ें)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

तर्जुमाः आप उन लोगों से कह दीजिए कि वह यानि अल्लाह एक है अल्लाह ही बे नियाज़ है उसके औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है और न कोई उसकी बराबर का है।

फ़ज़ीलतः- हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि जो सुबह की नमाज़ के बाद दस मर्तबा सूरह इख़्लास पढ़ेगा वह सारा दिन गुनाहों से महफ़ूज़ रहेगा चाहे शैतान कितना ही ज़ोर लगाए। (बिखरे मोती 2-50)

अल हम्दुलिल्लाह यह किताब ब उनवान "मोमिन का हथियार" पहली रबीउल अव्वल 1427 हिजरी में मुकम्मल हुई अल्लाह तआला महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से इस किताब को कुबूलियत बख़्शे आमीन।

अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

31 मार्च 2006 जुमा का दिन।

خاموش فتنوں کا علاج ، روزی میں برکت ،

جادو اور جنات کے شر سے حفاظت کا مجرب تعویذ

ایک اللہ کی بندگی کی طرف سے اُمت کو ہدیہ

نوٹ : یہ نقش کا تعلق رکھنے سے ہے پڑھنے سے نہیں ہے